चन्दामामा
मां - बच्चों का मासिक पत्र
50

पुरस्कृत परिचयोक्ति

मौत से खेल....

प्रेषक : श्री रोशनलाल गुप्ता, दुमका

मुँह की सुन्दरता के लिए
सी.एस.सरोजा
Remy
BORATED
TALCUM POWDER
Remy
SNOW
रेमी स्नो और पाउडर

जुलाई १९५८

विषय-सूची

*

एक प्रति ५० नये पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ६-००

THE CHOICE
Pencils
AJANTHA
BLACK LEAD
EMBESEE
BLACK LEAD
IMPERIAL
COPYING
ACCOUNTANT
COLOUR
CHECKING
COLOUR
SPECTRUM
12, COLOURS
EMBESEE ★ HB
Manufactured by
THE MADRAS PENCIL
FACTORY
3, STRINGER STREET.
MADRAS.

बच्चों के लिये
एक और सरल
गिब्स डेन्टिफ्रिस चित्रकारी प्रतियोगिता–
अद्भुत इनाम!

पहला इनाम : रेले बाइसिकल

दूसरा इनाम : एच. एम. वी. ग्रामोफ़ोन

तीसरा इनाम : व्यू मास्टर प्रोजेक्टर सेट

और १०० आकर्षक इनाम—प्रोत्साहन के लिये!

इस चित्र में रंग भरिए: यह बहुत ही आसान है और आपको मजा भी आयेगा! और आप एक अद्भुत इनाम भी जीत सकते हैं—कोई ऐसी चीज़ जो चिरकाल से आपको पाने की कामना रही है। वाटर कलर, रंगदार चाक, रंगदार पैन्सिलें या जो भी रंग आपके पास हों आप इस्तेमाल कर सकते हैं। इसे जितना सुंदर बना सकते हों, बनाइये और फिर गिब्स डेन्टिफ्रिस की डिबिया पर लपेटे हुए सेलोफ़ेन कागज पर से गिब्स की मुहर उतार कर, इस चित्र के साथ हमें भेज दीजिये। अपनी माता से कहिये कि वे आज ही आपको गिब्स डेन्टिफ्रिस की एक डिबिया खरीद दें। इसे रोज इस्तेमाल कीजिये!

तीन व्यक्तियों की एक कमेटी, कौन से चित्र सब से ज्यादा अच्छे हैं, इसका फैसला उनके गुणों के अनुसार करेगी। आज ही अपना दाखिला भेजिये!

इन नियमों को ध्यान में रखिये : १. भारत में रहने वाले, १४ वर्ष तक की आयु के सभी लड़के लड़कियाँ, इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। २. आप जितने दाखिले चाहें भेज सकते हैं, मगर हर दाखिले के साथ गिब्स डेन्टिफ्रिस की डिबिया पर लपेटे हुये सेलोफ़ेन कागज पर लगी हुई गिब्स की मुहर जरूर होनी चाहिये। ३. दाखिले शनिवार ३० अगस्त १९५८ की दोपहर के एक बजे तक इस पते पर पहुँच जाने चाहियें: पोस्ट बाक्स नं. १०११९ बम्बई १। ४. दाखिलों के खो जाने, समय पर न पहुँचने, इधर उधर या खराब हो जाने की ज़िम्मेदार कम्पनी नहीं होगी। ५. पहला, दूसरा और तीसरा इनाम जीतने वालों के नाम इस पत्रिका के नवम्बर के अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। अन्य इनाम जीतनेवालों को डाक द्वारा सूचना दी जायेगी।

GD. 40A-50 HI

नाम (साफ़ लिखिये) ______________________

____

पता (साफ़ लिखिये) ______________________

____
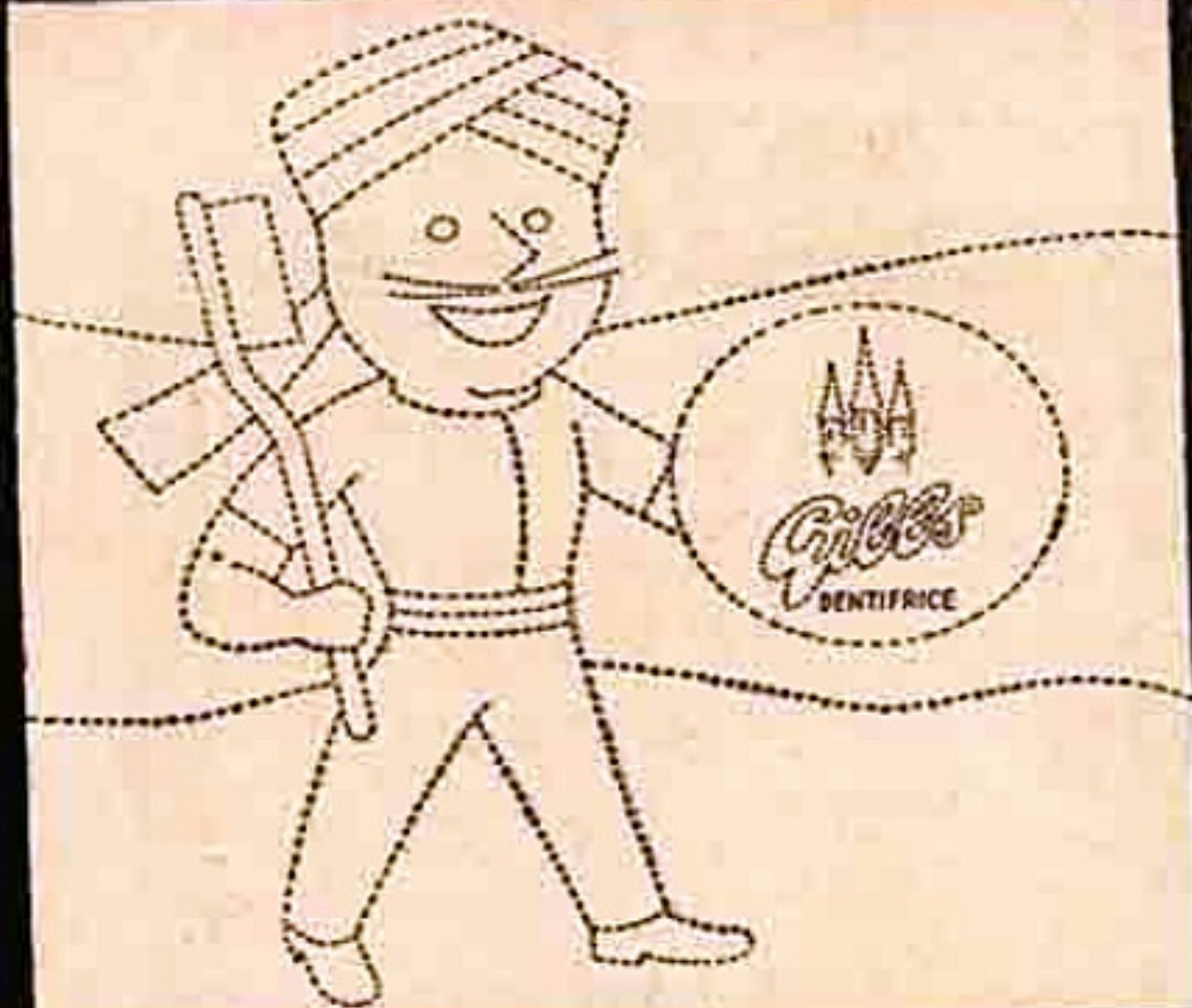
मैं वचन देता/देती हूँ कि यह चित्र मैंने किसी की सहायता बिना स्वयं बनाया है। मेरी आयु ...... वर्ष है। चन्दामामा

६. किसी भाग लेने वाले को एक से ज़्यादा इनाम नहीं मिलेगा।
७. निर्णयकारों का फ़ैसला अन्तिम तथा मान्य होगा। ८. प्रतियोगिता के सम्बंध में कोई पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

गिब्स डेन्टिफ़्रिस

दाँतों को अच्छी तरह साफ़ करता है, स्वाद में उत्तम है और देर तक चलता है!

GD. 408-30 HI

इस वक्त किताब
कितनी दिलचस्प है
– किन्तु चाय
हर वक्त इतनी
दिलचस्प होती है !
मैं चाय हूँ
मैं उनकी सखा हूं
जो लिखते और जो पढ़ते हैं
TEA BOARD INDIA
PST 200

मीटरिक प्रणाली

के प्रवर्तन का आरंभ

भारत में अभी तक नाप-तौल की समान प्रणाली नहीं है। हमारे यहां इस समय लगभग १४३ प्रणालियों का प्रयोग होता है। इस प्रकार की अनेकता से धोखाधड़ी को स्थान मिलता है। देशभर में मीटरिक नाप-तौल पर आधारित एक समान प्रणाली आरम्भ हो जाने से काफी सुविधा हो जायेगी और हिसाब-किताब बड़ा आसान हो जायगा, विशेषकर इसलिये कि हमारे यहां दाशमिक सिक्के शुरू हो चुके हैं। तौल और नाप-प्रतिमान अधिनियम, १९५६ ने मीटरिक प्रणाली के अन्तर्गत आधारभूत इकाइयां निश्चित कर दी हैं। इस प्रकार का सुधार धीरे-धीरे किया जायेगा ताकि जनता को कम से कम असुविधा हो।

इस प्रणाली के शुरू हो जाने के बाद भी किसी क्षेत्र या व्यापार में पुराने नाप-तौल का ३ वर्षों तक प्रयोग हो सकेगा।

नाप-तौल की मीटरिक प्रणाली के प्रवर्तन का आरंभ अक्तूबर १९५८ से हो रहा है।

मीटरिक बाटों को जानिये

तौल की इकाई
किलोग्राम = १ सेर ६ तोले (या ८६ तोले) या २ पौंड ३ औंस

कम इकाइयां

१० मिलीग्राम = १ सेंटीग्राम
१० सेंटीग्राम = १ डेसीग्राम
१० डेसीग्राम = १ ग्राम
१० ग्राम = १ डेकाग्राम
१० डेकाग्राम = १ हैक्टोग्राम
१० हैक्टोग्राम = १ किलोग्राम

बड़े बाट

१०० किलोग्राम = १ क्विंटल
१० क्विंटल या १,००० किलोग्राम } १ मीटरिक टन

भारत सरकार द्वारा प्रकाशित

गिब्स डॅन्टिफ़्रिस

चित्रकारी प्रतियोगिता

प्रतियोगिता नं १ का फल

हमें यह प्रगट करते हुए हर्ष होता है कि निम्नलिखित उमीदवारों को इस प्रतियोगितामें प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

प्रथम पुरस्कार फिलिप रेडियो	टी. सदाशिव भट पुरोमार, सरवंट पोस्ट सागर पश्चिम शिमोगा
द्वितीय पुरस्कार फ़ेवर लूबा रिस्ट वाच	प्रदीपसिंग देवजी सिक्का फॅक्टरी मृग नो होकर मृगानी।
तृतीय पुरस्कार अगफा आयसोला कॅमेरा	राकेश हूजा १२ अलीपूर रोड देहली।

इसके अलावा अन्य १०० उमीदवारों को भी पुरस्कार मिले है। इसकी सुचना उमेदवार को पोस्ट कार्ड द्वारा दी जायेगी।

छोटी एजन्सियों की योजना

'चन्दामामा' रोचक कहानियों की मासिक पत्रिका है।

अगर आपके गाँव में एजेण्ट नहीं है, तो शीघ्र रु. ३) भेज दीजिए। आपको चन्दामामा की ८ प्रतियाँ मिलेंगी, जिनको बेचने से रु. १) का नफ़ा रहेगा।

लिखिए :

चन्दामामा प्रकाशन

वडपलनी :: मद्रास-२६.

चन्दामामा
संचालक : चक्रपाणी
ग्रीष्मावकाश के बाद अब विद्यालय और विश्वविद्यालय खुल गये होंगे।
कई विद्यार्थी एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में जा रहे होंगे। शिक्षा की अनन्त श्रेणियों पर एक और सीढ़ी चढ़ गये होंगे।
जहाँ वर्गीकृत शिक्षा आवश्यक है वहाँ यह भी आवश्यक है कि बच्चे अपने भावी जीवन के लिए अध्यापकों की मदद से उचित आधार का निर्माण भी करें।
वर्ष : ९   जुलाई १९५८   अंक : ११

मुख - चित्र

द्रुपद के पुरोहित के हस्तिनापुर जाते ही पाण्डवों ने आगामी युद्ध में उनकी सहायता करने के लिए कई राजाओं के पास दूत भेजे। कृष्ण की सहायता पाने के लिए अर्जुन स्वयं उनसे मिलने द्वारका गया।

पाण्डवों की युद्ध की तैयारी के बारे में दुर्योधन ने अपने गुप्तचरों द्वारा जान लिया था। वह भी कृष्ण की सहायता के लिए द्वारका गया। अर्जुन और दुर्योधन एक ही दिन द्वारका पहुँचे। कृष्ण के गृह में पहिले दुर्योधन गया क्योंकि कृष्ण उस समय सो रहा था, इसलिये दुर्योधन सिरहाने के तरफ़ एक आसन पर बैठ गया। और अर्जुन पैताने की तरफ़ खड़ा हो गया।

कृष्ण ने उठते ही पहिले अर्जुन को देखा। फिर दुर्योधन को। उसने उन दोनों का आदर किया और उनसे पूछा कि वे किस काम पर आये थे। दुर्योधन ने अपना काम बताकर कहा—"आप तो पक्षपात करते नहीं, आपके लिए मैं और अर्जुन समान हैं। परन्तु मैं पहिले आया हूँ। अर्जुन मेरे बाद आया है। इसलिये मेरी सहायता करना आपका कर्तव्य है।"

"पहिले मुझे अर्जुन दिखाई दिया। इसलिये मैं तुम दोनों की समान रूप से सहायता करूँगा। मेरे पास सशस्त्र दस लाख नारायण हैं। वे एक तरफ़ और मैं एक तरफ़ रहूँगा।" कृष्ण ने कहा।

अर्जुन ने कृष्ण को चुना। दुर्योधन ने नारायणों को। फिर दुर्योधन ने बलराम से सहायता माँगी। उसने कहा कि वह किसी की भी तरफ़ से न लड़ेगा। कृतवर्मा ने दुर्योधन को एक अक्षौणी सेना दी।

दुर्योधन के जाने के बाद कृष्ण ने अर्जुन से कहा—"तुमने सशस्त्र नारायणों को न चुन कर मुझ निहत्थे को क्यों चुना?"

"यदि आप युद्ध में लड़ें तो मुझे क्या कीर्ति मिलेगी! मेरे लिये यह काफ़ी है यदि आप मेरे सारथी बनने की कृपा करें।" अर्जुन ने कहा। और कृष्ण इसकेलिये मान गया।

गरीब बहू

रामपुर नाम के गाँव में बीरसिंह नाम का किसान रहा करता था। वह बचत से रह कर अपनी जमीन जायदाद बढ़ाता आया था। उसके एक लड़का था, जिसका नाम रघू था। रघू की शादी के लायक उम्र हो गई थी। दहेज में उसे जो कुछ मिलेगा उसमें अपनी बचत का रुपया मिलाकर बीरसिंह जमीन खरीदने की सोच रहा था। परन्तु रघू अभी शादी के बारे में नहीं सोच रहा था।

एक त्यौहार आया। मेला देखने के लिए गाँव के मजदूर तक जा रहे थे। रघू भी मेला देखने निकला। जब वह अपने जवार के खेत के पास आया तो उसको लक्ष्मी नाम की लड़की खेत में दिखाई दी।

लक्ष्मी का पिता कभी समृद्ध था। परन्तु भाग्य ने उसका साथ न दिया, कर्ज बढ़ गया। जो कुछ था खो बैठा। वह बुरी हालत में मरा। लक्ष्मी की माँ उससे पहिले ही मर गई थी, अनाथ लक्ष्मी को दादी ने पाला पोसा था। अब उसकी दादी बहुत बूढ़ी हो गई थी। वह न ठीक तरह देख पाती थी न सुन ही पाती थी। लक्ष्मी मेहनत करके अपना पेट भरती। और बूढ़ी को भी खिलाती। दोनों एक झोंपड़े में रहा करते थे।

लक्ष्मी को देखकर रघू ने पूछा—"क्यों लक्ष्मी, सब मेले में जा रहे हैं और तू काम कर रही है?"

"अगर जा सकूं तो मैं क्यों नहीं जाऊँगी!" लक्ष्मी ने पूछा।

"निंदलाई के लिए मेरे पिता जी तुझे कितना दे रहे हैं!" रघू ने पूछा।

"दो आने।" लक्ष्मी ने कहा।

शशिभूषण

"केवल दो आने ही, जा, मैं दूँगा। मेला देख आ।" रघू ने कहा।

"मुझे नहीं चाहिए। सिर्फ क्या पैसे की ही बात है! मुझे काम भी तो करना है!" लक्ष्मी ने पूछा।

रघू कुछ न बोला। कुड़ता उतारकर वह भी खेत में एक तरफ़ से निहलाई करने लगा। निहलाई का काम तो हो गया पर काम की आदत न होने से वह थक गया। उसके मुँह पर पसीना आ गया। लक्ष्मी ने उसका मजाक किया। "तूने क्योंकि मेरा काम कर दिया है इसलिए हमारे घर आ, गुड़ का शरबत पिलाऊँगी।"

रघू, लक्ष्मी के साथ उसके घर गया। उसने उससे पहिले कभी झोंपड़े में पैर न रखा था। झोंपड़ा गरीबों का था पर वह आईने की तरह साफ़ था। लक्ष्मी की दादी बहुत चिड़चिड़े स्वभाव की थी। "न मालूम लक्ष्मी इस बुढ़िया के साथ कितने सब्र से रह रही है।" रघू ने सोचा।

लक्ष्मी ने रघू को गुड़ का शरबत पीने को दिया। रघू वहाँ से घर की ओर चल पड़ा। जब वह अपने पशुओं के घर के पास गया तो उसका पिता बीरसिंह मेंढ़ ठीक कर रहा था।

उसने अपने लड़के को देखकर कहा—"अरे रघू थोड़ा हाथ तो लगा। काम करनेवाले सब मेले में चले गये हैं। यह मेंढ़ ठीक करनी है और कम्बख्त एक भी नहीं दिखाई देता। इसलिए मुझे खुद ठीक करनी पड़ रही है।"

रघू पिता की मदद करने लगा।

लड़के को अन्यमनस्क देखकर बीरसिंह ने पूछा—"क्यों भाई, क्या सोच रहे हो?"

"कुछ नहीं पिताजी। शादी करने के लिए आप और माँ बहुत दिनों से कह रहे हैं। परन्तु क्योंकि अभीतक ठीक लड़की न मिली थी इसलिए मैंने कुछ न कहा था। पिताजी, अब मुझे मेरे लायक लड़की मिल गई है।" "वह लड़की कौन-सी है!" पिता ने पूछा।

"लक्ष्मी।" रघू ने कहा।

"हमारे घर कभी कभी काम पर आया करती है, वही न!" वीरसिंह ने पूछा।

"हाँ—वही मेरे लायक पत्नी है।" रघू ने कहा।

वीरसिंह ने कुछ देर सोचकर कहा—"कभी उनकी हालत भी हमारी तरह अच्छी थी। यही नहीं लक्ष्मी अक्लमन्द भी है। परन्तु वे अब कतई गरीब हैं।"

"उनकी ज़मीन-जायदाद से हमें क्या मतलब! वह अक्लमन्द है, मेहनती है। खूबसूरत भी है।" रघू ने कहा।

"हाँ, अगर कोई मुझ से पूछे तो मैं ज़रूर शादी करने के लिए कहूँगा। परन्तु तुम्हारी माँ बड़ी कँजूस है। दूध, दही, घी, बेचकर जितना कमाती है उसे मुझे दिखाती तक नहीं। जाने वह सब कहाँ रख देती है। वह यह शादी बिल्कुल नहीं मानेगी।" वीरसिंह ने कहा।

उसी दिन रघू ने अपनी माँ से भी शादी के बारे में कहा। उसने सब सुनकर कहा—"अगर तू लक्ष्मी से शादी करना चाहे तो क्या मैं रोकूँगी! पर तू तो जानता ही है तुम्हारा पिता कितना कँजूस है। अगर बिना दहेज के तूने एक गरीब लड़की से शादी करने की सोची तो वे बिल्कुल न मानेंगे।"

उसके बाद वीरसिंह ने पत्नी के साथ कुछ तय कर लिया। वीरसिंह की पत्नी

के भाई की एक लड़की थी। नाम था दुर्गा। कभी उन्होंने रघू की उससे शादी करने की सोची थी। दुर्गा के पास पाँच छः सौ रुपये की सम्पत्ति थी। वह इस समय कस्बे में रह रही थी। वीरसिंह और उसकी पत्नी ने सोचा यदि दुर्गा को एक महीने घर लाकर रखा तो रघू का दिल लक्ष्मी से हटकर दुर्गा पर लग जायेगा।

वीरसिंह किसी बहाने कस्बा गया और दुर्गा को गाड़ी में ले आया। दुर्गा में सौन्दर्य की अपेक्षा आडम्बर अधिक था। बुद्धि की अपेक्षा अहँकार अधिक था।

सम्पत्ति यद्यपि पाँच छः सौ रुपये की थी पर चलती लखपति की तरह थी। जब से वह आई थी उसने एक चीज़ उठाकर इधर से उधर न रखी। जहाँ वह बैठती कूड़ा कर्कट जमा कर देती। अपना काम भी दूसरों को सौंप देती। गाँव में उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। दिन रात बकवास किया करती। किसी को काम न करने देती।

रघू से उसकी माँ ने कहा—"बेटा, दुर्गा कस्बे में पली है—इसलिए वहाँ की कुछ आदतें आ गई हैं। वैसे उसका मन

अच्छा है। अगर वह तेरी स्त्री बन गई तो पाँच सौ रुपये की सम्पत्ति भी साथ लायेगी। तुम्हारा पिता बड़ा खुश होगा। उसे तुम खुश करने की कोशिश करो।"

"बहुत अच्छा, माँ," रघू ने कहा। परन्तु दुर्गा का व्यवहार दिन प्रति दिन बिगड़ता गया। घर के दो नौकरों ने काम छोड़ दिया क्योंकि दुर्गा ने उनको बुरी तरह डरा धमका दिया था। गौ बीमार पड़ी, उसे देखने भालनेवाला कोई न था। बीरसिंह ने लड़के से कहा—"ज़रा गौ पर नज़र रखना।"

"पिताजी, मैं कस्बा जा रहा हूँ। दुर्गा को कुछ चीज़ें चाहिये।" रघू ने कहा।

बीरसिंह की पत्नी न सोच पाई कि क्या किया जाये। दो-चार दिन लक्ष्मी को सहायता करने के लिए बुलाया। मगर मालूम हुआ कि लक्ष्मी की दादी को पक्षपात हो गया था और लक्ष्मी इसलिए न आ सकती थी।

रघू कस्बा गया और दस रुपये खराब करके दुर्गा के लिए चीज़ें ले आया।

उसी दिन बीरसिंह और पत्नी ने आपस में फिर बातचीत की।

"जब से दुर्गा आई है सब उल्टा हो रहा है। बिल्कुल आलसी है। मुझे इस तरह देखती है जैसे मैं उससे वेतन पाती हूँ। जाने कितनी ही चीज़ें तोड़ डाली हैं। अच्छा घर नरक-सा हो गया है। मैं तो पागल-सी हो गई हूँ।" पत्नी ने कहा।

"क्या यह एक ही बात है! हमारा रघू भी उसका गुलाम हो गया है। उसका दहेज लाना तो अलग—उससे दस गुना हमसे खर्च करवायेगी।" बीरसिंह ने कहा।

दोनों ने मिलकर दुर्गा को वापिस भेजने की सोची। बीरसिंह कोई बहाना करके कस्बा गया और साथ दुर्गा को भी ले गया।

उसी दिन बीरसिंह की पत्नी लक्ष्मी के घर गई। "जब तुम्हारी दादी इस हालत में है, तुम्हें बुलाना अच्छा नहीं है। तुम दोनों हमारे घर आकर रहो। मैं बिना किसी की सहायता से रह नहीं सकती। तुम्हारी दादी के लिए जो कुछ चाहिये, मैं इन्तज़ाम कर दूँगी।"

उसी दिन लक्ष्मी अपनी दादी के साथ बीरसिंह के घर चली गई। लक्ष्मी का घर में पैर रखना था कि घर में पहिले की तरह चैन आ गई। घर ठीक रखने में लक्ष्मी बहुत चतुर थी।

कुछ दिन बाद बीरसिंह ने रघू से कहा—"कभी कहा था कि लक्ष्मी से शादी करोगे! क्या अब भी शादी करना चाहते हो!"

"मैं हमेशा उससे ही शादी करना चाहता था। आपने ही इस बीच इधर उधर की करनी शुरु कर दी थी।" रघू ने कहा।

उसके कुछ दिनों बाद लक्ष्मी की रघू से शादी हो गई। सब सुख से रहने लगे।

[१८]

[पिंगल जब अवन्तीनगर पहुँचा तो माता से उसको अपने भाइयों की दुस्थिति के बारे में मालूम हुआ। तुरत उसने भल्लूक केतु को भेजकर राजा के खजाने का धन, जादूवाली थैली मँगवायी और भाइयों को भी छुड़वा कर घर बुलवाया। उसके बाद पिंगल की आज्ञा पर भल्लूक केतु एक अपूर्व महल बनाने की तैयारियाँ करने लगा। उसके बाद :—]

भल्लूक केतु अपने साथियों को लेकर अन्धेरा होने से पहिले अवन्तीनगर वापिस आ गया। उसकी देखरेख में नदी के किनारे महल बनने लगा। हजारों पिशाच, मजदूर आदि, नींव खोदकर एक विशाल महल बनाने लगे।

नदी के किनारे इन लोगों का हो-हल्ला सुन कर अवन्तीनगर के पहरेदारों ने वहाँ जाकर जानना चाहा कि क्या हो रहा था। इस तरह आये हुये कई लोगों को भल्लूक केतु के आदमियों ने महल बनाने के काम में लगा दिया। तलवार, भाले लेकर दो राजसैनिक आये। उनको भी उन्होंने मार पीट कर भगा दिया।

सूर्योदय से पहिले ही महल तैयार हो गया। पिंगल ने अपनी माँ और भाइयों को लेकर उसमें प्रवेश किया। प्रातःकालीन सूर्य की कान्ति में वह महल सोने की

तरह चमक रहा था। पिंगल ने भल्लूक केतु के पिशाचों में से पचास को पहरे के लिए रखकर बाकी को भल्लूक पर्वत वापिस भेज दिया। भल्लूक केतु ने चार दिवारी में लोहे के सीखचों वाले फाटक को खोला। फिर वह फाटक के पास पत्थर की कुर्सी पर पहरेदार की तरह बैठ गया।

तब तक अवन्तीनगर के राजमहल में तहलका मच गया था। एक सैनिक, जो महल बनता देखने गया था और पिट-पिटाकर वापिस आया था मन्त्री के पास जाकर रोया धोया। जब मन्त्री को यह मालूम हुआ कि वहाँ काम करनेवाले भूत-पिशाच थे तो उसने उन बातों पर विश्वास करना उचित न समझा क्योंकि कभी ऐसी बात न सुनी गई थी।

"अरे भाई, इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। तुझे शराब के नशे के कारण भूत दिखाई दिये होंगे। अब घर जाकर आराम करो। राजा को यदि खबर मिली तो तुझे कैद भुगतनी पड़ेगी।" मन्त्री ने कहा।

"नहीं, महामन्त्री! अब भी कई हमारे सैनिकों को उन्होंने पकड़ रखा है। इन पिशाचों से पिट-पिटाकर भाग कर आनेवालों में मैं अकेला ही नहीं हूँ। और क्या कहूँ! आप किले के बुर्ज पर खड़े हो कर देखिये, नदी के किनारे वह महल आपको भी दिखाई देगा।" पहरेदारों के सरदार ने कहा।

मन्त्री ने बुर्ज पर चढ़कर देखा। सामने, नदी के किनारे, सूर्य की रोशनी में एक विचित्र महल चमचमा रहा था। उसके आश्चर्य की सीमा न रही। "यह क्या आश्चर्य है!" सोचता सोचता वह बुर्ज से नीचे उतर ही रहा था कि खजांची ने

रोते धोते कहा—"महामन्त्री! सत्यनाश हो गया। खजाने में एक कौड़ी भी नहीं छोड़ी, सब चोर उठा ले गये। क्या आफ़त है!" उसने कहा।

"खजाने में चोरी हो गई है! पहरेदार कहाँ गये थे! उन्हें तुरत यहाँ पकड़ कर लाओ।" मन्त्री ने काँपते हुये ज़ोर से कहा।

"पहरेदारों की कोई गलती नहीं है। खजाने के दरवाजे जैसे बन्द थे वैसे अब भी बन्द हैं। उनके ताले भी ठीक हैं। सब माया सी माळूम होती है।" खजांची ने आकाश की ओर देखते हुये कहा।

"सब माया है!" महामन्त्री ने गुस्से में गरजते हुये कहा—"इस माया की सजा क्या होगी, जानते हो! फाँसी। चलो, राजा के पास चलें।"

मन्त्री, खजांची, जब राजा के कमरे के पास पहुँचे तो जेल का अधिकारी वहाँ घबराता हुआ आया। उसने कहा—"महामन्त्री! बड़ी आफ़त आगई है। जीवदत्त और लक्षदत्त गायब हैं।"

यह सुन मन्त्री की मानों अक्ल ही जाती रही। उसने जेल के अधिकारी से पूछा—

"ये जीवदत्त और लक्षदत्त क्या कोई देवता हैं! वे कैसे गायब हो गये!"

"उनकी कोठरी में सिर्फ एक बोरा है। उतना बड़ा बोरा कोई आदमी नहीं बना सकता है। उसे किसी राक्षस ने अथवा देवता ने ही बनाया होगा।" जेल के अधिकारी ने कहा।

मन्त्री सोचने लगा। नदी के किनारे बनता महल, सैनिक की बातें, राजमहल में हुई करामातों के बारे में सोचते हुये मन्त्री को एक बात साफ़ हो गई कि वे किसी मनुष्य के कारनामें नहीं थे। कैद से गये

हुये जीवदत्त और रक्षदत्त का एक जादूगर भाई था, जिसका नाम पिंगल था। यह मन्त्री ने पहिले भी सुन रखा था।

"अच्छा, जो कुछ हुआ है, उसके बारे में राजा को भी सूचना दी जाये। जादूगर पिंगल अब इस शहर में फिर वापिस आ गया होगा।" मन्त्री ने सोचते हुये कहा।

जब राजा के कमरे में गये तो वहाँ भी हो हल्ला हो रहा था। "सच बताओ, तुम सबको फाँसी पर चढ़ाऊँगा। मेरी जादू की थैली कहाँ है?" राजा तिलमिलाता पूछ रहा था। उसके सामने राजमहल की रसोई में काम करनेवाले नौकर हाथ बाँधे खड़े थे।

मन्त्री के आते ही राजा ने उसकी ओर मुड़ कर कहा—"मन्त्री। इन सब को बाँधकर हाथियों से कुचलवा दो। दुष्टों ने मेरी जादूवाली थैली चुरा ली है।"

"महाराज। और भी कई आश्चर्यजनक बातें हुई हैं।" यह कहकर मन्त्री ने सारी बातें उसे सुना दीं। राजा ने क्रुद्ध होकर कहा—"तुरत पचास सैनिकों को लेकर उस महल में जाओ और वहाँ के सब आदमियों को बाँधकर लाओ।" राजा ने आज्ञा दी।

"महाराज! सावधानी से सोचिये।" मन्त्री कुछ कहने वाला ही था कि राजा ने गुस्से में कहा—"तुम उस मछियारे को राज्य सौंपकर मन्त्री बने रहने की सोच रहे हो क्या?"

मन्त्री कोई जवाब न दे सका। उसी समय प्रासाद-रक्षक ने आकर पूछा—"क्या आपकी यह आज्ञा है कि उस मछियारे पिंगल को घोड़े पर बाँधकर घसीट कर लाऊँ?"

"उसे तुम घोड़े से बांधकर घसीटकर लाओ या गधे से बांधकर, दोनों मेरे लिये बराबर हैं। मुझे चाहिये जादू की थैली और खजाने से गया हुआ धन। समझे! अब जाओ।" राजा ने गुस्से में उससे कहा।

प्रासाद-रक्षक, सशस्त्र पचास सैनिकों को लेकर पिंगल के महल के पास पहुँचा। चार दिवारी के पास, पत्थर की कुर्सी पर ऊँघते भल्लूककेतु को देखकर सैनिक घबरा गये। उन्होंने अपने सरदार से कहा—"यह तो कोई राक्षस मालूम होता है। उसके वे कान देखिये, हाथी के कान-से लगते हैं। दान्त जंगली सूअर के से हैं।"

प्रासाद-रक्षक ने अट्टहास करके कहा—"अरे नादानों! डरो मत। यह कोई हमें डराने के लिए यों वेष बनाये हुए है।" फिर उसने घोड़े को ऐंड़ लगाई। भल्लूककेतु के पास जाकर उसके हाथ में भाला मारते हुए कहा—"अरे घमंडी, आँखें खोल। प्रासाद-रक्षक आये हैं।"

भल्लूककेतु ने आँखें खोलीं। अपने हाथ में से भाला निकाल कर उससे प्रासाद-रक्षक के पेट में भोंका। उसके दोनों पैरों

को पकड़ कर, घुमा-घुमाकर नदी में फेंक दिया।

यह दृश्य देखते ही सैनिक हाय-हाय करते, सिर पर पैर रखकर वहाँ से भाग गये। भल्लूक केतु ने थोड़ी देर उनकी ओर देखा। फिर मुस्करा कर, वह अपनी पत्थर की कुर्सी पर आँखें मूँदकर बैठ गया, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

सैनिकों ने भागकर राजा के पास आकर सारी घटना सुनाई। वह सुन राजा के गुस्से का ठिकाना न रहा।

"अरे, निकम्मो! तुम एक जंगली को पकड़ कर न ला सके। छी।" राजा ने कहा। तुरत मन्त्री ने सामने आकर विनयपूर्वक कहा—"महाराज, जल्दबाजी न कीजिये। हम नहीं जानते कि वह राक्षस है या जंगली। आप शायद जानते ही हैं कि वह मछुआ पिंगल जादूगर भी है!"

"भले ही वह मान्त्रिक हो, जादूगर हो! उसका इतना साहस कि अवन्तीनगर के राजा का षिकार करे! उसका सिर कटवाकर किले के फाटक पर लटकवा दूँगा।" कहते कहते उसने तालियाँ बजाकर—"सेनापति—सेनापति।" सेनापति को बुलाया।

"हुजूर!" कहता सेनापति सामने आया। राजा ने उसको आज्ञा दी—"पिंगल के महल को मिट्टी में मिला दो और वहाँ जितने आदमी हों उनको बाँधकर लाओ।"

सेनापति बहुत जोश में आगया क्योंकि पिछले दिनों कोई युद्ध न हुआ था इसलिए वह बहुत निरुत्साहित हो गया था। उसने सोचा कि इस बार वह नदी के किनारेवाला महल मिट्टी में मिला सकेगा और वहाँ के लोगों की बोटी बोटी कटवा सकेगा। "क्या अच्छा होता अगर इस पिंगल के पास छोटी मोटी सेना होती। मुक्का-मुक्की, हाथा पाई होती, भयंकर युद्ध होता। मजा आता।" उसने सोचा।

दो सौ घुड़सवार और तीन सौ पदातियों के साथ सेनापति धूम धाम से पिंगल के महल के पास गया। मल्लकेतु एक आँख मूँद कर यह दिखा तो रहा था कि वह सो रहा था पर वह एक आँख से

सेनापति का आगमन भी देख रहा था। सेनापति ने चार दीवारी के पास आकर, भाले से भल्लूकेतु का निशाना बनाकर पूछा—"क्यों जंगली! तुम्हारा मालिक कहाँ है! उठो, खड़े हो।"

भल्लूकेतु, आँखें मलता, अंगड़ाइयाँ लेता ऐसा उठा जैसे कि सचमुच सोकर उठा हो। उसने सेनापति को देखकर गुस्से में पूछा—"कौन है यह नीच मनुष्य! तुम ही हो!"

ये प्रश्न सुनकर सेनापति गुस्से के कारण जल सा उठा। उसने भाला आगे कर, घोड़े को भल्लूक केतु की ओर बढ़ाया। जब भाला लगने ही वाला था तो भल्लूक केतु एक तरफ हट गया। घोड़े पर सवार सेनापति को दोनों हाथों से पकड़कर, पत्थर की कुर्सी पर डाल दिया और उस पर चढ़कर जोर से तालियाँ बजाने लगा, अट्टहास करने लगा।

तुरत उसके अनुचर, तरह तरह के पत्थर के हथियारों को लेकर आये।

उन्हें भागते हुये सैनिकों को दिखाकर भल्लूक केतु ने कहा—"इन्हें पकड़कर रुई की तरह धुन दो।"

भल्लूक केतु के अनुचरों ने राजा की सेना पर हमला किया—और पत्थर के हथियारों से उनकी खूब मरम्मत की। यह दृश्य देख कर पिंगल, उसकी माँ, और भाई ठट्टा मारकर हँसे, वे तब महल के दुमंजले पर खड़े थे।

बचे खुचे सैनिक भागे भागे राजमहल में गये। राजा से जाकर शिकायत की। तब राजा जान गया कि पिंगल कोई मामूली जादूगर न था। उसने अपने गुस्से को रोक कर मन्त्री से कहा—"मन्त्री! यह बहुत ही अपमानजनक

बात है। मौत ही हो जाये, मैं स्वयं अपनी सेना का नेतृत्व कर उस पिंगल से युद्ध करने निकलूँगा। अगर मैं मर जाऊँ तो तुम ही मेरी इकलौती लड़की की सदैव रक्षा करना और योग्य वर ढूँढ़कर उसका विवाह कर देना।"

मन्त्री थोड़ी देर तक कुछ सोचता रहा। "महाराज! आप बिना बुरा माने, जो कुछ मैं कहने जा रहा हूँ, वह कृपया सुनिये। यही मेरी सविनय प्रार्थना है।" उसने कहा।

"क्या है वह?" राजा ने पूछा।

"पिंगल नौजवान है। अविवाहित है। जो उसे जानते हैं उन्होंने बताया है कि देखने भालने में भी वह किसी राजा से कम नहीं है। शौर्य, साहस, ऐश्वर्य में भी उसको मात करनेवाला कोई नहीं। राजकुमारी का उसके साथ विवाह कर देने से आप पर और राज्य पर जो आपत्ति आई हुई है, वह टल जायेगी।" मन्त्री ने कहा।

"मैं इससे सहमत हूँ।" राजा ने कुछ देर सोचकर, सन्तोषपूर्वक कहा।

मन्त्री जाकर पिंगल और उसकी माँ से मिला। उसने उनको राजा की इच्छा के बारे में बताया। पिंगल भी विवाह के लिए मान गया क्यों कि उसने राजकुमारी के सौन्दर्य के बारे में पहिले ही सुन रखा था।

उसके कुछ दिनों बाद पिंगल का और राजकुमारी का धूम-धाम से विवाह हुआ। महामन्त्रिक पद्मपाद ने विवाह के अवसर पर वर-वधू को आशीर्वाद दिया। फिर कुछ समय बाद राजा की मृत्यु हो गई। पिंगल उसके बाद अवन्तीनगर का राजा बना। उसने कई साल प्रजा की इच्छा के अनुकूल राज्य किया। [समाप्त]

मौन मूर्ति

विक्रमार्क तो हार मानना जानता न था। वह फिर पेड़ के पास गया। शव उतार कर कन्धे पर डाल चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा! मनुष्य के लिए सबसे अधिक मुख्य चीज़ है विश्वास। किसी भी हालत में मनुष्य को अपना विश्वास नहीं छोड़ना चाहिए। किसी समय सत्यपाल नाम के नवयुवक ने विश्वास छोड़कर कितनी बड़ी गल्ती की थी, बताता हूँ, ध्यान देकर सुनो।" उसने तब यह कहानी सुनाई।

भद्रावती नगर में एक राम का मन्दिर था। उस मन्दिर का राम, कहा जाता था, बहुत ही महिमाशाली था। वह अपने पुजारी द्वारा भक्तों के सन्देहों का निवारण

बेताल कथाएँ

करता। उनके कष्टों को दूर करता। कई बार भगवान का स्वर ही सुनाई पड़ता। जब कभी वैसा होता तो मन्दिर में उपस्थित भक्त, भक्ति में सहसा तन्मय हो जाते।

उस मन्दिर में आंजनेय स्वामी पुजारी था। लोग उनको हनुमान का अवतार समझकर उनकी पूजा किया करते थे, आदर किया करते थे।

भद्रावती के राम मन्दिर की प्रसिद्धि देश विदेशों में थी, इसलिये लोग दूर दूर से भगवान के दर्शन के लिए आया करते। इन यात्रियों के कारण भद्रावती नगर की आर्थिक स्थिति इतनी सुधरी कि वह एक महानगर हो गया।

पुजारी एक बार बीमार पड़े और कुछ दिनों में वे राम में लीन हो गये। मन्दिर में एक और पुजारी को नियुक्त करना था। इसकेलिये सत्यपाल नाम का नवयुवक निश्चित हुआ।

सत्यपाल बचपन से ही रामभक्त था। सिवाय राम नाम जपन के उसको और कोई काम न था। वह पूजा पाठ की पूरी क्रिया भी अच्छी तरह जानता था। इसलिये सत्यपाल का पुजारी नियुक्त होना सबको जँचा।

परन्तु एक बात हुई। जब से सत्यपाल पुजारी नियुक्त हुआ था तब से मूर्ति चुप हो गई थी। पहिले की तरह भक्त आते, प्रश्न पूछने पर उनका उत्तर भगवान पुजारी को न बताते, मूर्ति भी कभी स्वयं न बोलती।

यह परिवर्तन देख सत्यपाल बहुत चिन्तित हुआ। "स्वामी, मुझ से क्या गल्ती हुई है। आप क्यों नहीं बोलते! मौन रहने से तो अच्छा

यही है कि आप मुझे दंड दें। उसने कई तरह से राम की प्रार्थना की पर श्री राम न बोले।

सत्यपाल ने नगर के बड़े लोगों से कहा—"अगर इतने बड़े देवता मौन हो गये हैं तो गल्ती मेरी ही रही होगी, यह साफ़ है।"

"हाँ, भाई, गल्ती तुम्हारी ही होगी। उसको ठीक कर, देवता का अनुग्रह प्राप्त करो। नहीं तो हमारे मन्दिर की महिमा चली जायेगी। यात्री आना छोड़ देंगे, हमारे नगर की हानि होगी।" बड़े बुजुर्गों ने कहा।

सत्यपाल की तो मानो अक्ल ही जाती रही। वह मन्दिर में वापिस आकर, पागल की तरह दरवाजे के पास बैठकर कुछ सोचने लगा। मन्दिर में आनेवाले भक्तों की संख्या कम होती जा रही थी।

दुपहर तक मन्दिर में एक भी भक्त न रहा। किसी के आने की आहट सुन सत्यपाल ने सिर उठाकर देखा। एक बुढ़िया आ रही थी। वह उस बुढ़िया को नहीं जानता था। वह भी एक भक्त थी। प्रायः मन्दिर के प्रांगण में दिखाई देती

थी। कभी वह आँगन बुहारती तो कभी पेड़ों को पानी देती।

उस बुढ़िया ने सत्यपाल के पास जाकर पूछा—"क्यों, स्वामी बोल नहीं रहे हैं!"

"नहीं माँ, मुझे नहीं सूझ रहा कि क्या करूँ!" सत्यपाल ने निश्वास छोड़ते हुये कहा।

"अगर तुमने हुँडी में से सौ रुपये निकालकर दिये तो मैं ऐसा रास्ता बताऊँगी कि भगवान तुम से बातें करने लगेंगे।" बुढ़िया ने उससे अलग कहा।

यह सुन सत्यपाल आगबबूला हो गया। "छी, बुढ़िया कहीं की, मैं तो इस ख्याल में था कि तुम कोई भक्त हो। घूंस देकर भगवान का अनुग्रह चाहती हो! जाओ, उठो और कहीं जाओ।" सत्यपाल ने झिड़का।

बुढ़िया बिना गुस्सा किये चली गई। अगले दिन उसी समय आकर उसने सत्यपाल से कहा—"दो सौ रुपये दो। मैं वह रास्ता बताऊँगी जिससे भगवान बोलेंगे। यूं हि न बिगड़ो।"

सत्यपाल ने उसे फिर डाँटा। परन्तु उसके बाद उसे एक प्रकार का सन्देह होने लगा—भगवान शायद इस तरह उसकी परीक्षा तो नहीं ले रहे! इस बुढ़िया को घूंस देना भगवान की दृष्टि में गल्ती ही हो।

वह इसी उधेड़बुन में था कि तीसरे दिन बुढ़िया के आते ही उसने कहा—"जो तू चाहेगी वह मैं दूँगा। मुझे ऐसा उपाय बताओ कि स्वामी बोलें।"

"हुंडी में से तीन सौ रुपये निकाल कर दो।" बुढ़िया ने कहा। सत्यपाल ने उसे देदिये। "अब बताओ क्या करूँ!" उसने पूछा।
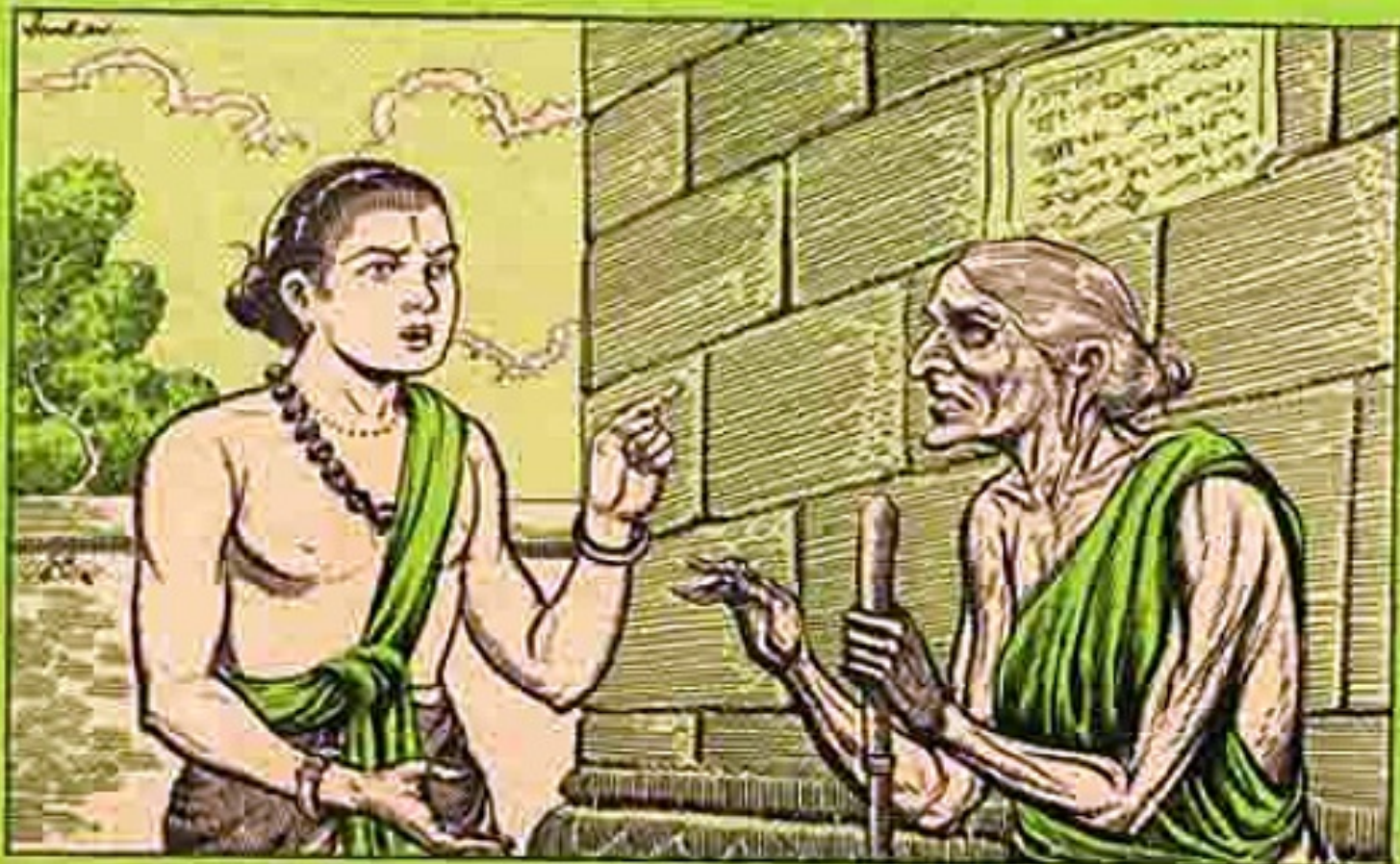
"मूर्ख तुम में बुद्धि नहीं है। इतने दिन कौन बोला करता था! मैं और अंजनेयस्वामी। भक्त जो कुछ पूछा करते हम बताया करते। मूर्ति के पीछे भूमि में एक गढ़ा है। मैं उसमें छुप कर सब कुछ बताया करती थी। अगर तुमने मुझ पर भरोसा रखा तो तुम्हारी मदद भी करूँगी। बुढ़िया ने कहा।

सत्यपाल का तो हृदय रुक-सा गया। "मुझे तुम से कोई काम नहीं है। जा।" बुढ़िया को भेजकर सत्यपाल तभी मन्दिर से बाहर कहीं चला गया। बुढ़िया की बातें सुनकर उसका राम की महिमा में, जनता को ठगनेवाले पुजारियों में, मन्दिरों में विश्वास चला गया। भद्रावती नगर से, बिना किसी को कहे वह निकल गया और देश देशान्तर में घूमने फिरने लगे। भीख माँगकर, तरह तरह के काम करके किसी तरह पेट भरता। वह अनेक मास यों घूमता रहा। परन्तु भद्रावती छोड़ने के बाद उसने एक मन्दिर में भी पैर न रखा। एक बार भी भगवान का नाम न लिया।

दो वर्ष बीत गये। अन्धेरा होने के बाद सत्यपाल एक गाँव की धर्मशाला में

गया। वह धर्मशाला के बरामदे में बैठा था तो पास ही कुछ लोग भद्रावती के राम की मूर्ति की महिमा गाने लगे। सत्यपाल वह सब सुन रहा था।

उसने आश्चर्य से उनके पास जाकर कहा—"क्यों भाई, क्या भद्रावती की राम की मूर्ति सचमुच महिमावाली है, बताओ!"

"इस तरह क्या पूछ रहे हो! कहीं ऐसे लोग भी हैं, जो भद्रावती के राम की महिमा नहीं जानते हों! नये पुजारी के आने के बाद तो उनकी महिमा के कहने ही क्या! उसके मन्दिर में आते ही, मूर्ति ने कहा कि उस मन्दिर में रहनेवाली बुढ़िया के गले में रुपया फँस जायेगा और वह मर जायेगी। उसका कहना ठीक निकला।" उनमें से एक ने कहा।

"तो आजकल मन्दिर का पुजारी कौन है!" सत्यपाल ने उन लोगों से उत्कण्ठापूर्वक पूछा।

"वह बहुत छोटा है। नाम उसका सत्यपाल है। उसके मुँह पर क्या तेज है!" उन्होंने कहा।

"सत्यपाल! मेरा नाम भी सत्यपाल है।" सत्यपाल ने कहा।

अन्धेरे में उन लोगों ने सत्यपाल को गौर से देखा; कहा—"आश्चर्य है। उस पुजारी का केवल नाम ही नहीं है—वह ठीक उस पुजारी की तरह भी है।"

उसके मन्दिर छोड़कर आने के बाद उसी की शक्ल-सूरत वाला, उसी के नाम वाला कोई पुजारी हो गया था, यह जान सत्यपाल सोचने लगा—"इसमें जरूर कोई बहुत बड़ा धोखा है।"

अगले दिन वह भद्रावती गया और सीधे मन्दिर में गया। मन्दिर के पास

बहुत बड़ी भीड़ थी। भीड़ को जैसे तैसे चीरता सत्यपाल मन्दिर के अन्दर गया। उसको देखकर लोगों ने कहा—"पुजारी हैं। रास्ता दो।"

सत्यपाल ने देखा कि मन्दिर में ठीक उसी की शक्ल का आदमी पुजारी था। उसे ऐसा लगा कि वह पुजारी उसे पास बुला रहा था। सत्यपाल पुजारी के पास गया।

"क्यों भाई, कोई बुढ़िया ठग मेरे नाम से लोगों को धोखा दे रही है, यह सुन, मुझ में विश्वास क्यों छोड़ा! तुम्हारा जाना क्या अच्छा है! देख, अब मुझे तुम्हारा काम करना पड़ रहा है।" पुजारी ने कहा।

सत्यपाल जान गया कि उससे बात करने वाले श्रीराम स्वयं थे। "मेरी गल्ती क्षमा करो, भगवान। मैं अब कभी आपको छोड़कर न जाऊँगा।" आपकी सेवा करूँगा। उसने पुजारी से हाथ जोड़कर कहा।

"मुझे तुम्हारी सेवा नहीं चाहिये। मुझ में विश्वास रख कर लोगों की सेवा करो।" कहकर पुजारी एक बार चमका

और अन्तर्धान हो गया। सत्यपाल भी वापिस चला गया। उसके बाद उस मन्दिर में किसी को देवता का स्वर नहीं सुनाई पड़ा। धीमे धीमे लोगों ने उस मन्दिर के बारे में बातें करना भी छोड़ दिया। कालक्रम से भद्रावती का मन्दिर खण्डहर हो गया।

बेताल ने यह कहानी सुना कर कहा—"राजा, मुझे एक सन्देह है। रामचन्द्र ने सत्यपाल का पुजारी होना क्यों नहीं माना? इसलिए कि वह उस पर विश्वास छोड़कर चला गया था? भद्रावती रामालय की महिमा चले जाने का कारण क्या सत्यपाल था? या उस मन्दिर की पूज्य श्रीराम की मूर्ति? इनका तूने जान बूझकर उत्तर न दिया तो तेरा सिर तुरत फूट जायेगा।

विक्रमार्क ने कहा। यह असत्य है कि श्रीराम को सत्यपाल पर गुस्सा आ गया था। क्योंकि उसको अपने ऊपर विश्वास न रहा था। गुस्सा आया होता तो वह उसकी जगह, उसकी शक्ल बदल कर इतने दिनों पुजारी का काम कर अपनी महिमा नहीं दिखाता। श्रीराम ने अपनी महिमा इसलिए ही दिखाई थी ताकि उसको उसमें विश्वास हो। उससे पहिले जितनी महिमा उस मन्दिर में देखी गई थी, वह सब धोखा था। परमात्मा ने अपनी वास्तविक महिमा केवल अपने भक्त सत्यपाल को ही दिखाई थी। इसलिए यदि उस मन्दिर की महिमा जाती रही तो उसका कारण न सत्यपाल था, न श्रीराम ही।"

राजा का इस प्रकार मौन भँग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होगया और पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

[१०]

[राजकुमारी के अज्ञान से अलादीन अद्भुत दीप खो बैठा था। परन्तु वह अपनी अंगूठी के भूत की सहायता से मोरोको में अपनी पत्नी से मिला। मान्त्रिक को एक चाल से मार कर, अपनी पत्नी और महल को वापिस लाया। फिर से वह राजा का स्नेह पात्र हो गया उसके सारे कष्ट दूर हो गये। किन्तु—]

कुछ महीने बीत गये। अलादीन, ने एक दर्जी के लड़के के रूप में जीवन शुरु किया था। और अब वह ऐसा ऐश्वर्य पत्नी और माँ के साथ अनुभव कर रहा था, जो बड़े-बड़े महाराजाओं को भी दुर्लभ था।

एक दिन वह अपने स्फटिक मँडप में खिड़की से बाग की शोभा देख रहा था कि उसकी पत्नी उसके पास आकर खड़ी हो गई। उसने कहा—"भगवान की दया से हमें किसी चीज़ की कमी नहीं है। परन्तु हमारे बच्चे होते न देख मुझे कुछ दुख और चिन्ता हो रही है। इस नगर में फातिमाँ नाम की कोई योगिन आई हुई हैं। उन्हें देखने से बांझ के भी बच्चे पैदा हो जाते हैं। क्या उन्हें हम एक बार अपने घर बुलायें?"

अलादीन ने न केवल इसके लिए अपनी स्वीकृति ही दी परन्तु उनको लिवा लाने के लिए चार गुलाम भी भेजे।

योगिन आईं। उनका मुँह ढका हुआ था। उनके गले में मोटी रुद्राक्ष माला थी। बड़ी प्रभावशाली जान पड़ती थीं।

राजकुमारी ने जाकर योगिन को नमस्कार किया। योगिन ने उसको आशीर्वाद दिया। राजकुमारी ने गौरवपूर्वक उनको आसन दिया। "माँ, आपका आशीर्वाद व्यर्थ नहीं जाता—क्योंकि आप जैसे भक्तों की बात भगवान सुनते हैं। मेरी एक इच्छा है। मैं बच्चे चाहती हूँ। उसके लिए मैं क्या करूँ, बताइये। जो आप बतायेंगी, मैं वह करने के लिए तैयार हूँ। अगर आपने मेरा यह उपकार किया तो मैं आपको कितने ही भेंट दूँगी। मैं जानती हूँ कि आपको उन भेंटों की ज़रूरत नहीं है। मेरे दी हुई भेंट यदि आपके योग्य न हो तो आप उसे गरीबों में बांट सकते हैं।"

राजकुमारी जब इस तरह बातें कर रही थी कि योगिन की आँखों में एक विचित्र प्रकार की कान्ति आई। उनके शरीर में एक प्रकार का आनन्द फूट-सा रहा था। उन्होंने कुछ न कहा। परन्तु अपने दोनों हाथ राजकुमारी के सिर पर रख कुछ जपने लगीं—मानों प्रार्थना कर रही हों। उसके बाद उन्होंने कहा—"राजकुमारी! भगवान की दया से तुम्हारे माँ बनने के लिए एक उपाय सूझा है, पर तुम्हारे लिये उस उपाय का आचरण करना असम्भव है।"

राजकुमारी ने योगिन के पावों पर पड़कर कहा—"माँ, मेरे पति अलादीन के लिए कोई भी चीज़ असम्भव नहीं है। बताइये, मुझे क्या करना है। नहीं तो आपके चरणों में ही मैं अपने प्राण छोड़ दूँगी। मुझे सन्तान चाहिये।"

योगिन ने अंगुली उठाकर कहा—"अगर तुम बच्चे चाहती हो तो उसका एक ही रास्ता है। काकेशस पर्वतों में रहनेवाले बड़े गिद्ध के अंडे को लाकर तुम अपने बुर्ज पर लटकाओ। अगर तुम उसे रोज़ देखते रहे तो तुम्हें गर्भ होगा और बच्चे भी होंगे। यही मेरी सलाह है।"

"माँ, मैं नहीं जानती कि यह गिद्ध क्या है और उसका अंडा कैसा होता है। परन्तु अगर ऐसी कोई चीज इस संसार में कहीं है तो उसे मेरा पति ज़रूर ला सकेगा। यह मेरा विश्वास है। उन्होंने कितने ही चमत्कार किये हैं।" राजकुमारी ने सन्तुष्ट होकर कहा।

योगिन जाने के लिए उठीं। राजकुमारी ने उनसे आतिथ्य स्वीकार करने के लिए बहुत बार कहा किन्तु योगिन ने उसकी न सुनी। "कितने ही अभागे मुझे देखने के लिए आये हुए हैं। उनकी इच्छायें पूरी करनी हैं। कष्ट भी दूर करने हैं। अगर भगवान की इच्छा रही तो कल आकर तुम्हारा हालचाल मालूम करूँगी।" कहकर वे चली गईं।

उनके जाने के कुछ देर बाद अलादीन आया। और पत्नी को चिन्तित देखकर उसने पूछा—"क्यों ऐसी हो!"

"काकेशस पर्वत से बड़े गिद्ध का अंडा तुरत मँगवाइये। नहीं तो मैं जिन्दा नहीं रहूँगी।" राजकुमारी ने कहा।

अलादीन ने हँसते हुए कहा—"यदि तेरे प्राण इतनी आसानी से रखे जा सकते हैं तो तुम्हारे चिन्तित होने की कोई आवश्यकता नहीं। उस अंडे को अभी मँगाता हूँ। पर उसका क्या करोगे?"

“उनको बुर्ज पर लटका कर योगिन ने उन्हें रोज़ देखने के लिए कहा है। वैसा करने से बच्चे होंगे।” राजकुमारी ने कहा।

“अच्छा, तो उसे अभी मँगाता हूँ।” अलादीन ने कहा।

उसने अपने कमरे में जाकर अद्भुत दीप को रगड़ा। भूत ने प्रत्यक्ष होकर पूछा—“क्या आज्ञा है!”

“काकेशस पर्वत के शिखरों पर रहनेवाले बड़े गिद्ध पक्षी का अंडा तुरत चाहिये। लाओ।” अलादीन ने कहा।

यह बात अलादीन के मुख से निकली ही थी कि अद्भुत दीप इस तरह गरजा कि सारा महल कांप-सा उठा। “मूर्ख, परम नीच। तुम क्या कह रहे हो! तुम हम भूतों के राजा गिद्ध पक्षी की सन्तान को लाने के लिए कहते हो! अंगूठी यदि तेरी रक्षा नहीं कर रही होती तो तुझे मैं भस्म कर देता।” भूत चिल्लाया।

अलादीन घबरा गया। “भूत! मुझपर गुस्सा न करो। मैंने यह काम अपने लिये करने के लिए नहीं कहा था। यह काम मेरी पत्नी का है। उसने सन्तान की इच्छा से ही यह कामना प्रकट की है। इसलिए गुस्सा न करो।”

तुरत भूत ने शान्त होकर कहा—“अलादीन! अच्छा हुआ कि यह तेरे लिये नहीं है। यह चाल एक और नीच की है। नहीं तो तुम, तुम्हारी पत्नी और तेरा महल सब नष्ट हो जाते। अपने को सिद्ध दिखानेवाली और कोई नहीं है सिवाय मोरोको मान्त्रिक के भाई के। देखने में वह जादूगर-सा है। दुष्टता में भी वह उससे कम नहीं है। उसका भाई, तेरे हाथों मारा गया है, यह जानकर वह तुमसे बदला लेना चाहता है। यह रहस्य तुम्हें मैंने बता दिया है, इसलिए तुम

उससे सावधान रहो।" यह कहकर भूत अदृश्य हो गया।

अलादीन को गुस्सा आया। उसने अपनी पत्नी के पास जाकर कहा—"गिद्ध पक्षी के अंडे के मँगाने से पहिले यह ज़रूरी है कि इस योगिन ने जो कुछ कहा है, मैं स्वयं सुनूँ। इसलिए उन्हें एक बार और बुलाओ। उनके आने तक मैं परदे के पीछे छुपा रहूँगा। उनसे एक बार और पूछो कि उस अंडे का क्या करना है। कहना कि उनकी पहिले बताई हुई बातें भूल गई हो।"

राजकुमारी ने उसकी बात मानकर, योगिन को बुलाया। योगिन आई। उनके राजकुमारी के पास आते ही अलादीन परदे के पीछे से उस कपट योगिन पर कूदा और अपनी तलवार से उसने उसका गला काट दिया।

"अरे अरे, आपने कितना बड़ा पाप किया है!" राजकुमारी ने गुस्से में कहा।

अलादीन ने मुस्कराते हुए अलग पड़े हुए योगिन के मुँहपर से बुरका हटाया। उसकी दाढ़ी और मूँछे देखकर राजकुमारी चकित हुई और भयभीत भी।

अलादीन ने उस कपट योगिन के बारे में विस्तारपूर्वक बताया—"भगवान की क्योंकि हम पर अब भी कृपा है—इसलिए हम इस आखिरी शत्रु से पीछा छुड़ा सके। अब हमें किसी से डरने की ज़रूरत नहीं है। इसके मरने से हमारे सब कष्ट दूर हो गये हैं।"

उसके बाद अलादीन के बहुत-से बच्चे हुए। बूढ़ी अलादीन की माँ ने कितने ही पोते-पोतियों को गोदी में ढोया। वे बहुत दिनों तक आराम से जीते रहे।

(समाप्त)

गुणवती

कांचीपुर में कभी शक्तिसार नाम का एक वैश्य नवयुवक रहता था। बाप दादाओं का जमाने से व्यापार था। उसी में उसने भी लाखों रुपये कमाये। बीसवें वर्ष में उसकी शादी होनी थी।

"गृहण: प्रिय हिताय दार गुणा:" (पत्नी के गुण ही पति के लिए उपकारी व हितकारी होते हैं।) क्योंकि शक्तिसार ने यह सुन रखा था इसलिए उसने एक गुणवती स्त्री से विवाह करने का निश्चय किया। वह स्वयं अपने लिये लड़की खोजने के लिए निकल पड़ा।

शक्तिसार ज्योतिष जानता था। भविष्य बताने के उद्देश्य से उसने कई कन्याओं के हाथ देखे। उसने अच्छी लड़कियों की एक छोटी-सी परीक्षा भी ली।

वह अपने साथ दो सेर धान ले जा रहा था। वह जिस लड़की को पसन्द करता, उसे वह धान दे देता और कहता—"क्या इस धान से मेरे लिये भोजन पका सकोगी?" यह सुन कई कन्यायें उसपर हँसती और कई अचरज करके पूछतीं—"यह कैसे हो सकेगा!" परन्तु किसी ने भी वह न किया।

जब वह लड़की के लिए यों खोज रहा था तो जाते जाते वह कावेरी नदी के किनारे गया। वहाँ उसने एक झोंपड़े में गुणवती नाम की लड़की देखी। उसके साथ उसको पालने पोसनेवाली एक बुढ़िया थी। वे बहुत गरीब थे।

शक्तिसार ने गुणवती का हाथ देखा। उसने उसमें कुछ अच्छे लक्षण पाये। उसने उससे कहा—"मेरे पास धान है। क्या उससे

यशपाल

आज के लिए भोजन तैयार कर सकोगी!" यही वह औरों से भी पूछ रहा था।

गुणवती यह सुन कर न हँसी न उसने आश्चर्य ही प्रकट किया। वह उसके लिए भोजन बनाने के लिए तैयार हो गई।

उसने धान भिगोकर सुखाया। फिर उसका छिल्का निकाला। छिल्का बुढ़िया को देकर उसने कहा—"इसे सुनारों को बेचकर जो पैसा मिले उससे न अधिक सूखी, न अधिक गीली लकड़ियाँ ले आना। आमले के बीज भी लेते आना।"

बुढ़िया ने वैसा ही किया। गुणवती ने चूल्हा जलाकर, चावल धोकर, चूल्हे पर रखे। चावल के उबलते ही, उसने मांड़ निकाली। उसमें उसने नमक डाली। उसमें आमले के बीज डालकर, मुट्ठी भर अन्न लेकर शक्तिसार को देते हुये कहा—"इसे मुख में डाल लो और मांड़ पी लो। फिर थोड़ी देर विश्राम कर, स्नान करके आओ, तब मैं तुमको भोजन परोसूँगी।"

चावल के पकते ही गुणवती ने लकड़ियाँ बुझादीं और उनके कोयले बनाकर बुढ़िया को देते हुए कहा—"इन्हें भी किसी को देकर—जो पैसे मिलें, उनसे शाक और लस्सी भी लेते आना।" बुढ़िया के लाये हुए शाक को भी उसने बनाया। भोजन के समय के पहिले ही उसने अतिथि को नहाकर आने के लिए कहा।

शक्तिसार ने स्नान करने के बाद शाक और लस्सी के साथ भोजन किया। उसे गुणवती की बचत और सूझ बूझ देखकर सन्तोष हुआ। उसने उसे अपना सारा वृन्तान्त सुनाया और उससे शादी करने के लिए कहा। गुणवती मान गई। वह उसे अपने शहर ले गया। वह उसके साथ बहुत दिनों तक सुख से रहा।

काकोलूकीयं

महिलारोप्य नगर में ऊँचा
बरगद का था पेड़ घना,
मेघवर्ण नामक कौए का
जिस पर था इक दुर्ग बना ।

राजा था वह सब कौओं का
बड़ा बहुत ही था परिवार,
पालन करता उन सबका वह
करता रहता सदा विहार ।

वहीं पास ही किसी गुफा में
कई उल्लुओं का था वास,
अरिमर्दन था राजा उनका
करता सुख से सदा विलास ।

दिन भर तो वे उल्लू रहते
छिपे गुफा में ही चुपचाप,
किंतु रात के अँधियाले में
बाहर आते अपने आप ।

आकर वे सब उस बरगद के
चक्कर देते चारों ओर,
कौए जो मिल जाते उनकी
गर्दन देते शीघ्र मरोड़ ।

उल्लू का था वैर पुराना
कौओं से लेते प्रतिशोध,
लेकिन कौवे रात्रि-अंध थे
कर न सके कुछ भी प्रतिरोध ।

कुल का होते नाश देख यों
मेघवर्ण अति हुआ उदास,
बुला मंत्रियों को तब उसने
कहा एक ले लम्बी साँस—

"शत्रु हमारा बहुत प्रबल है
तुला हमारा करने नाश,
अगर न कुछ हम युक्ति करेंगे
हो जाएगा सत्यानाश !"

श्री 'भारतभक्त'

'उज्जीवि' नाम था प्रथम मंत्री का
बोला वह ही पहले—"राजन्,
सन्धि शत्रु से करना अच्छा
नहीं युद्ध का अभी प्रयोजन।

जीत न पाएँगे हम लड़कर
शत्रु हमारा है बलवान,
दुर्बल मगर अभी हैं हम तो
व्यर्थ करें क्यों हम अभिमान?"

'संजीवि' नाम था जिस मंत्री का
उसने तब यह कहा विचार—
"संधि नहीं, विग्रह के द्वारा
ही हम दें अब उन्हें पछाड़।

अरिमर्दन है क्रूर लालची
नहीं संधि करने के योग्य,
उसका अंत करेंगे जब हम
सुख तब भोग सकेंगे भोग्य।

नहीं हमें कुछ भय करना है
युद्धमात्र ही शेष उपाय,
करें युद्ध ही हम सब मिलकर
यही अभी मेरी है राय।"

यह सुनकर 'अनुजीवि' मंत्रि ने
कहा—"राय मेरी है भिन्न,
संधि और विग्रह से उल्टे
शक्ति हमारी होगी छिन्न।

जब तक हम सब प्रबल न बनते
अच्छा है पीछे हट जायँ,
हटकर पीछे करें युक्ति यह
जिससे जीत उन्हें हम पायँ।"

'प्रजीवि' नामक मंत्री इस पर
बोला—"नहीं, नहीं, यह ठीक नहीं,
रक्षा का आयोजन करके
जमे रहें हम सभी यहीं।

रहकर अपनी जगह 'मगर' है
हाथी को भी देता मार,
किंतु वही बाहर आने पर
कुत्ते से भी जाता हार!"

चिरंजीवि मंत्री तब बोला—
"मेरा तो है यही विचार,
बिना सहारा लिये किसी का
अभी न होगा बेड़ा पार।

बिना सहारे के कोई भी
नहीं कभी कुछ कर सकता है,
आग तभी जल पाती है जब
मदद पवन उसकी करता है।"

मंत्री जो सब से बूढा था
'स्थिरजीवि' था उसका नाम,
मेघवर्ण ने अब उससे ही
पूछा करके विनय प्रणाम—

"दादा, आप बहुत हैं ज्ञानी
कहें हमें क्या करना आज,
अगर प्रजा ही नहीं रहेगी
तो भोगूँगा कैसे राज?"

"इन्हीं मंत्रियों की बातें तो
नहीं नीति के हैं प्रतिकूल,"—
वृद्ध मंत्री बोला यह—"लेकिन
नहीं अभी वे सब अनुकूल।

चाल हमें ऐसी चलनी है
जिसका हो ऐसा परिणाम,
आँच न आये हम पर कुछ भी
दुश्मन का हो काम तमाम।

जहाँ शक्ति से, जहाँ संधि से
नहीं बने कोई भी काम
वहाँ बुद्धि से औ छल से ही
कर लेना है हमको काम।

उल्लू तो युग-युग के दुश्मन
हो सकता है मेल नहीं,
और रात में लड़कर उससे
विजयी होना खेल नहीं।"

मेघवर्ण ने कहा—"मंत्रिवर!
कहें कृपा कर आप कहानी,
चली आ रही उल्लू-दल की
क्यों हमसे दुश्मनी पुरानी?"

जादू का घोड़ा

सैकड़ों साल पहिले साबूर नाम का बादशाह फारस पर राज्य किया करता था। उन दिनों दुनियाँ में उससे बड़ा सम्राट कोई न था। दान, धर्म आदि में, प्रजा को सुखी रखने में भी उससे बड़ा कोई न था। उसके महल में हर कोई जा सकता था, चाहे जो माँग सकता था। उसके मुख से कभी "नहीं" निकलता। वह सबकी इच्छाओं को पूरा करने का प्रयत्न करता।

साबूर के एक कमाल अम्मार नाम का लड़का था और तीन खूबसूरत लड़कियाँ थीं। वह प्रति वर्ष दो उत्सव मनाया करता। एक उत्सव वसन्त में होता और दूसरा शरत् काल में। इन उत्सवों में बादशाह बड़ी बड़ी दावतें देता। खुशियाँ मनाता। इन उत्सवों में संसार के कोने कोने से लोग आते, बादशाह को उपहार देते और उसका सत्कार पाते। कैदी छोड़े जाते। कर्मचारियों को तरक्की मिलती, उनकी हैसियत बढ़ायी जाती, वेतन वृद्धि की जाती।

एक साल वसन्तोत्सव के अवसर पर तीन सिद्ध पुरुष आये। उनमें से एक भारतदेश से आया, दूसरा रूमी देश से और तीसरा फारस के किसी दूर प्रान्त से। औरों की तरह ये तीन भी बादशाह के लिए तीन चीज़ें भेंट में लाये किन्तु इनकी लाई हुई तीनों चीजें बड़ी विचित्र थीं, वैसी चीजें कोई और न लाया था।

भारत देश से आये हुए सिद्ध पुरुष ने बादशाह को मनुष्य की एक सोने की मूर्ति

श्री बिमल चौधरी

दी। उस मूर्ति के हाथ में सोने का बाजा था। बादशाह उसे देखकर बड़ा खुश हुआ। उसने आश्चर्य से पूछा—"है तो यह बहुत सुन्दर पर इसका उपयोग क्या है?"

"महाप्रभु। आप इसे अपने किले के फाटक पर रखवाइये। जब कोई शत्रु किले की ओर आयेगा तो यह मूर्ति उसे दूर से ही देख लेगी और हाथ के बाजे को मुख से बजायेगी। और उसकी आवाज सुनकर शत्रु तितर बितर होकर भाग जायेंगे। यह मूर्ति जबतक आपके किले के फाटक पर रहेगी, तब तक आपको शत्रु का भय न होगा।" भारत देश के सिद्ध पुरुष ने कहा।

फिर बादशाह ने रूमी देश के सिद्ध पुरुष के लाये हुए उपहार की ओर देखा। एक बड़े चान्दी के तख्त के बीच में एक सोने का मोर था। उसके चारों ओर सोने की मोरनियाँ थीं। वे भी देखने में बड़ी खूबसूरत थीं। आश्चर्यजनक थीं। बादशाह ने उससे भी पूछा कि उसका क्या उपयोग था।

"महाप्रभु! ये मोरनियाँ घंटे में एक बार बोलकर दिन रात समय बतायेंगी। यह मोर महीने में एक बार मुख खोलकर चन्द्रमा को दिखायेगा। इन मोर मोरनियों

की यही विशेषता है।" रूमी देश के सिद्ध पुरुष ने कहा।

बादशाह ने खुश होकर तीसरे उपहार की ओर देखा। वह काली लकड़ी से बनाया गया घोड़ा था। उसके शरीर पर सोना चान्दी, वगैरह से जड़ी हुई कलें थीं। उस पर बैठने के लिए जीन थी। पैर रखने के लिए रिकाब भी थीं। सचमुच, वह जीता जागता घोड़ा लगता था।

"देखने में तो यह घोड़ा बहुत सुन्दर मालूम होता है पर इसका उपयोग क्या है?" बादशाह ने पूछा।

फ़ारस देश के सिद्ध ने कहा—
"महाप्रभु! यह जादू का घोड़ा है। कोई
भी इस पर चढ़कर आकाश में जहाँ चाहे
वहाँ बहुत तेज़ी से जा सकता है। जो
फ़ासला मामूली घोड़ा एक साल में तय
करता है वह यह एक दिन में तय
कर लेगा।

"आश्चर्य है। आप तीनों के उपहार
बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। जबतक मैं
इनको परख नहीं लेता तबतक इनकी
महत्ता पर मुझे विश्वास नहीं हो सकता।"
बादशाह साबूर ने कहा।

तुरत तीन चीज़ों की परीक्षा ली गई।
तीनों ठीक निकलीं। सोने की मूर्ति ने
सैनिकों को देखकर इस तरह बाजा बजाया
कि वे हक्के-बक्के रह गये। मोरनियाँ भी
हर घंटे-घंटे बोलीं। आखिर, जादू के
घोड़ेवाला सिद्ध, उसपर चढ़कर आकाश में
मंड़राया और ठीक बादशाह के सामने
उतरा। सब को अचरज था।

इन बातों को देखकर बादशाह के
आश्चर्य की तो सीमा न रही। उसने सिद्धों
को बुलाकर कहा—"आपने मुझे बहुमूल्य
चीज़ें लाकर उपहार में दी हैं। इनके
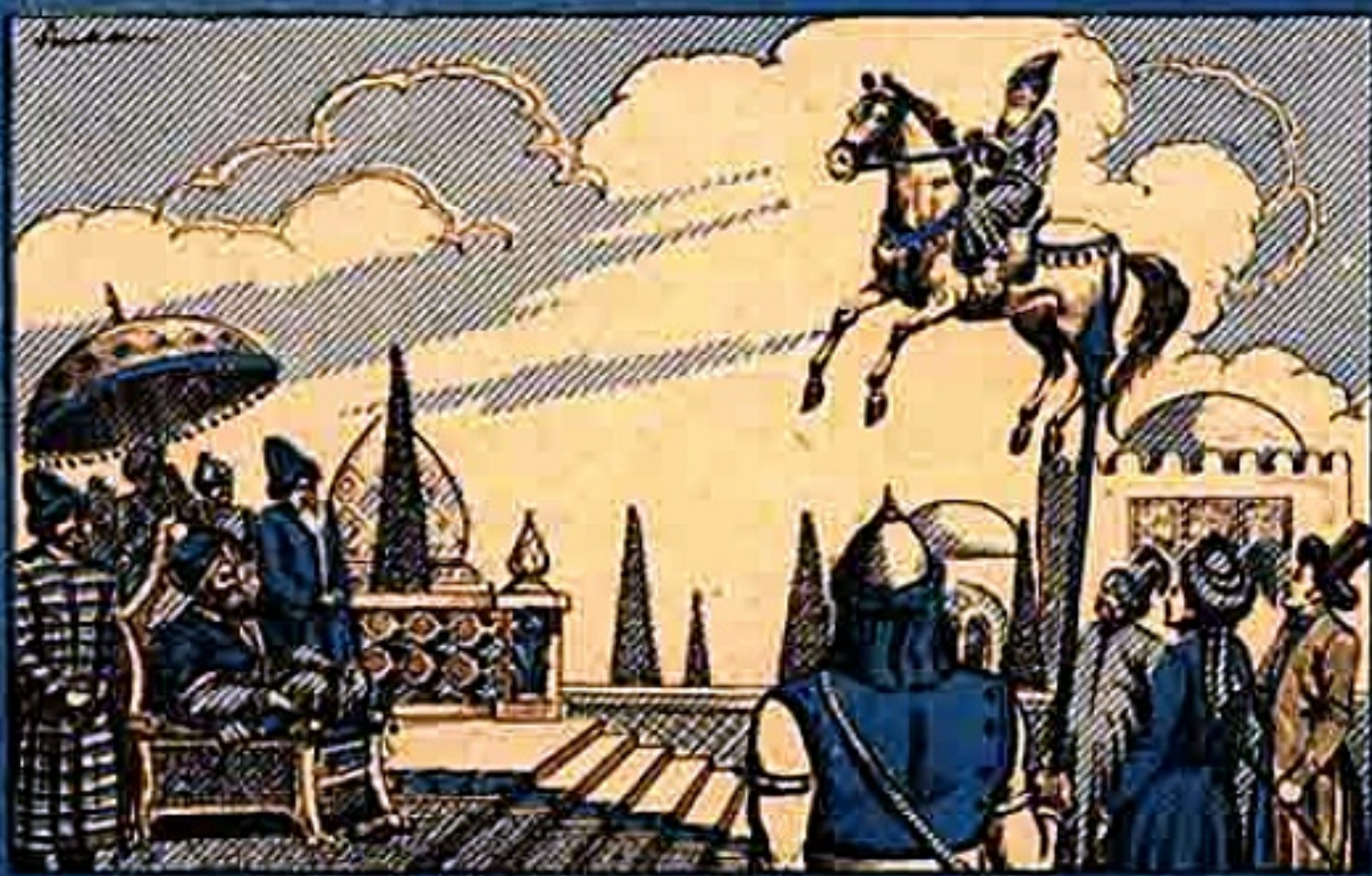
बदले में आप जो माँगे, उनको देना मेरा कर्तव्य है। इसलिए आप जो मुझसे चाहते हों, बताइये, मैं निस्संकोच आपकी इच्छाओं को पूरी करूँगा।"

उन तीनों ने राजकुमारियों को विवाह में माँगा। बादशाह भी न झिझका। उसने काज़ियों को बुलाकर भरे दरबार में विवाह के लिए निमन्त्रण पत्र भी लिखवा दिये। बड़ी लड़की का भारत देश के सिद्ध पुरुष के साथ, मंझली का, रूमी के सिद्ध के साथ, छोटी का फारस के सिद्ध के साथ सबके सामने विवाह निश्चित हुआ।

इन विवाहों का इस तरह निश्चित किया जाना राजकुमारियाँ परदे के पीछे से देख रही थीं। उन तीनों में छोटी अपनी बड़ी बहिनों से कहीं अधिक सुन्दर थी। वह अपने होनेवाले पति को देखकर घबरा गई क्योंकि वह सौ साल का बूढ़ा था। उसके सारे शरीर पर झुर्रियाँ थीं। आँखें भी धंस गई थीं। दुबला पतला था। देखने में भी बड़ा बदसूरत था।

यह देख कि उतना बूढ़ा उसका पति होने जा रहा था, वह अपने दुःख को न रोक सकी। अपने कमरे में जाकर बिस्तरे पर

ओंधा गिर, फूट-फूट कर रोने लगी। दुःख में उसने अपने सब कपड़े फाड़ दिये। मुँह भी खरोंच लिया। बाल बिखेर कर वह मानों दुःख की मूर्ति-सी बन गई। वह रोती जाती थी।

जब यह हो रहा था तब राजकुमार अम्मार शिकार पर गया हुआ था। उसने वापिस आकर अपनी छोटी बहिन की हालत जानी। तुरत उसके पास जाकर उसने पूछा—"क्यों रो रही हो बहिन! तुम पर क्या मुसीबत आ पड़ी है! मुझ से सब कुछ सच सच बता।"

राजकुमारी ने और जोर से रोते हुए कहा—"मैं कुछ नहीं छुपाऊँगी, भैय्या! मैं इस घर में नहीं रहूँगी। कहीं जाकर भीख माँगकर रहूँगी। जब पिता मुझ पर इतना अन्याय कर रहे हैं तो सिवाय अल्लाह के मेरा और कोई नहीं है।"

"यह तो बता पिताजी ने तुझ पर क्या अन्याय किया है! निष्कारण तुम दुःखी मत हो।" अम्मार ने कहा।

"भैय्या! क्या कहूँ! पिताजी ने मुझे एक भयंकर बूढ़े को शादी में देना का वचन दिया है। वह बूढ़ा देखने में कोई जादूगर-सा लगता है। एक जादू के घोड़े को लाकर, पिताजी को देकर, उसने उनपर जादू-सा कर दिया है। मैं मर जाऊंगी, पर उस बूढ़े से शादी नहीं करूँगी।" राजकुमारी ने कहा।

कमाल अम्मार ने बहिन को बहुत तरह से समझाया बुझाया। फिर उसने पिता के पास जाकर कहा—"पिताजी, सुना है, किसी जादूगर ने आकर आपको कोई उपहार दिया है। उसके लिए आप बहिन की उससे शादी करने के लिए मान गये हैं। इस तरह बहिन पर

अन्याय करना क्या ठीक है ! यह कभी न हो सकेगा।"

बादशाह के पास ही वह सिद्धपुरुष था। उसको, ये बातें सुनकर बड़ा गुस्सा आया। परन्तु इतने में बादशाह ने कहा—"बेटा, अगर तुम इस सिद्धपुरुष के लाये हुए घोड़े को देखते तो ऐसा नहीं कहते।" कहकर वह अपने लड़के को आँगन में ले गया।

सेवकों ने जादू के घोड़े को लाकर राजकुमार के सामने रखा। उसका सौन्दर्य देखते ही अम्मार का मुँह खिल-सा गया। वह क्योंकि घुड़सवारी में बहुत तेज था, झट जादू के घोड़े पर जा बैठा। जिस तरह वह मामूली घोड़े को चलाता था उसी तरह उसने उस घोड़े के पेट छुआ। पर वह जादू का घोड़ा न हिला।

बादशाह ने सिद्ध की ओर मुड़कर कहा—"घोड़ा हिल नहीं रहा है। वह कैसे चलेगा यह राजकुमार को बताओ।" सिद्ध ने राजकुमार के पास जाकर कहा—"घोड़े के गले के बाईं तरफ़ सोने की जो कील दिखाई दे रही है, उसे एक तरफ़ घुमाने से घोड़ा उठेगा।"

राजकुमार ने कील घुमाई। तुरत घोड़ा बाण की गति से ऊपर उठा और देखते देखते आकाश में कहीं अदृश्य हो गया।

बादशाह ने राजकुमार के आने की इन्तजार की। घँटे बीत गये। पर उसको न आता देख वह फ़िक्र करने लगा। उसने सिद्ध से कहा—"स्वामी, हमें अब क्या करना चाहिये कि वह वापिस आ जाये?

जब से राजकुमार ने कहा था कि उससे राजकुमारी की शादी नहीं होनी चाहिये तब से वह सिद्ध राजकुमार पर बहुत क्रुद्ध था। इसलिए उसने जानबूझकर राजकुमार को भूमि पर वापिस आने की कील न बताई थी।

"राजा। अब हम कुछ नहीं कर सकते। अब आपके लड़के का वापिस आना असम्भव है। क्योंकि अभी मैंने नीचे उतरने के लिए कील न बताई थी कि आपका लड़का आकाश में उड़ चला। उसकी इतनी जल्दबाजी दिखाना उसी की गल्ती है।" सिद्धपुरुष ने कहा।

बादशाह को सिद्ध पर बहुत गुस्सा आया। उस गुस्से में उसने अपने सैनिकों से कहा—"इस दुष्ट को खूब पीटकर जेल में डाल दो।" उन लोगों ने राजा की आज्ञा का पालन किया।

तदनन्तर, बादशाह दुःख सागर में डूब गया। उसका दुःख देखकर राजकर्मचारियों ने उत्सव बन्द कर दिये। महल के दरवाजे बन्द कर दिये। राजकुमार के चले जाने पर शोक प्रकट करने लगे।

(अभी और है)

डाकुओं का सरदार

किसी जमाने में एक जंगल में डाकुओं का एक गिरोह रहा करता था। उन डाकुओं ने आस पास के गाँवों में डाके डालकर बहुत-सा रुपया लूटा था। परन्तु उनको अभी तक कोई पकड़ न पाया था। किसी को उनके रहने की जगह भी न मालूम थी।

उसी जंगल में एक गरीब, उसकी पत्नी और उनका लड़का आनन्द रहा करते थे। आनन्द जब बड़ा हुआ तो उसे डाकुओं के बारे में कुछ कुछ पता लगने लगा। उसको यह भी पता लगा कि उसके शरीर पर यदि कुड़ता न था तो इसका कारण डाकू ही थे। उसने निश्चय किया कि उन डाकुओं को मारकर रहेगा।

"बेटा, तुम छोटे हो। तुम उन डाकुओं का क्या कर सकोगे? वे बड़ी असानी से तुम्हारे प्राण ले सकते हैं।" उसके माँ बाप ने उसे समझाया।

परन्तु आनन्द ने अपना निश्चय न बदला। डाकुओं को मारने की उसकी इच्छा दिन प्रति दिन प्रबल होती जाती थी। एक दिन अपने माँ बाप से कहकर वह डाकुओं के रहने की जगह देखने निकल पड़ा।

आनन्द जंगल में जा रहा था कि जाते जाते बड़ा तूफ़ान आया। वह वर्षा में भीग रहा था। रास्ता भी ठीक तरह नहीं दिखाई पड़ रहा था। चलते चलते उसको एक दिया कहीं दिखाई दिया। आनन्द उस दिये की ओर चल पड़ा। आखिर उसने एक मकान के किवाड़ खटखटाये। वह मकान बहुत बड़ा था। आनन्द ने कभी न सोचा था कि वहाँ इतना बड़ा मकान होगा। वह डाकुओं का मकान था।

देवराज

एक बुढ़िया ने आकर किवाड़ खोला। उस समय उस मकान में सिवाय उस बुढ़िया के कोई न था।

"दादी, बाहर बहुत बुरी तरह बारिश हो रही है, क्या अन्दर आसकता हूँ!" आनन्द ने पूछा।

"अन्दर तेरी हालत और भी बुरी होगी, बेटा! अन्दर न आओ।" बुढ़िया ने कहा।

"क्यों दादी!" आनन्द ने पूछा।

"क्योंकि यह ड़ाकुओं की रहने की जगह है। ये लोग मुझे उठा लाये हैं और मुझ से दुनियाँ भर के काम करवा रहे हैं। इनमें दया-दाक्षिण्य कुछ भी नहीं है। ये हर किसी का सब कुछ ले लेते हैं। अगर कुछ न हो तो उसके प्राण ले लेते हैं।" दादी ने कहा।

"अगर प्राण जाते हैं तो जाने दो। बाहर तूफ़ान के मारे मरने की अपेक्षा अन्दर आराम से मर जाऊँगा।" कहता आनन्द अन्दर आया।

मकान में, धन के ढ़ेर के ढ़ेर लगे थे। आनन्द उन ढ़ेरों के बीच में लेट गया और उसने सोने के लिए आँखें मूँद लीं।

इतने में डाकू आये। उन्होंने आनन्द को देखकर दादी से पूछा—"यह कौन है! क्या इसके पास कोई धन है!"

"उसके शरीर पर कुड़ता भी नहीं है। पैसा तो क्या होगा!" दादी ने कहा।

यह सुन ड़ाकुओं ने हंसकर कहा—"तो यह हमारे राज्य का ही रहनेवाला होगा। इसे अभी मार दें या कल सवेरे तक सतायें!"

इन बातों को आनन्द ने सुना। उसने सोचा कि मामला बिगड़ रहा था। उसने चोरों से कहा—"महाशयो, मेरी छुटपन से

डाकू बनने की इच्छा रही है। इसलिए आप लोगों की नौकरी करने आया हूँ।"

यह सुन डाकुओं को सन्तोष हुआ। "यह क्यों नहीं कहते! हम नये आदमियों को लेते ही रहते हैं। पर जो लोग हम में शामिल होते हैं उनको एक परीक्षा देनी होती है। जो हमारा शिष्य होना चाहता है, उसे ऐसी चोरी करनी होती है कि जिसमें न वह पकड़ा जाय, न किसी की हानि ही हो! जो इस तरह की चोरियाँ दो बार करता है, हम उसे अपने बराबर समझते हैं। जो तीन बार करता है उसे हम सरदार बना लेते हैं! पर यह याद रखो जिसकी चोरी करो उसको चोरी का पता नहीं लगना चाहिये, न उसको किसी तरह का कोई नुक्सान ही होना चाहिये।"

आनन्द उसके लिए मान गया। वह अगले दिन सवेरे ही डाकुओं के मकान से चल पड़ा। जाते समय उसने उस घर से एक सुन्दर चप्पल ले ली। उस चप्पल को रास्ते में छोड़ वह पास वाली झाड़ियों में छुप गया। थोड़ी देर बाद एक किसान, बैलों को बेचने के लिए ले जाता उस तरफ़ से गुजरा। किसान ने रास्ते में चप्पल
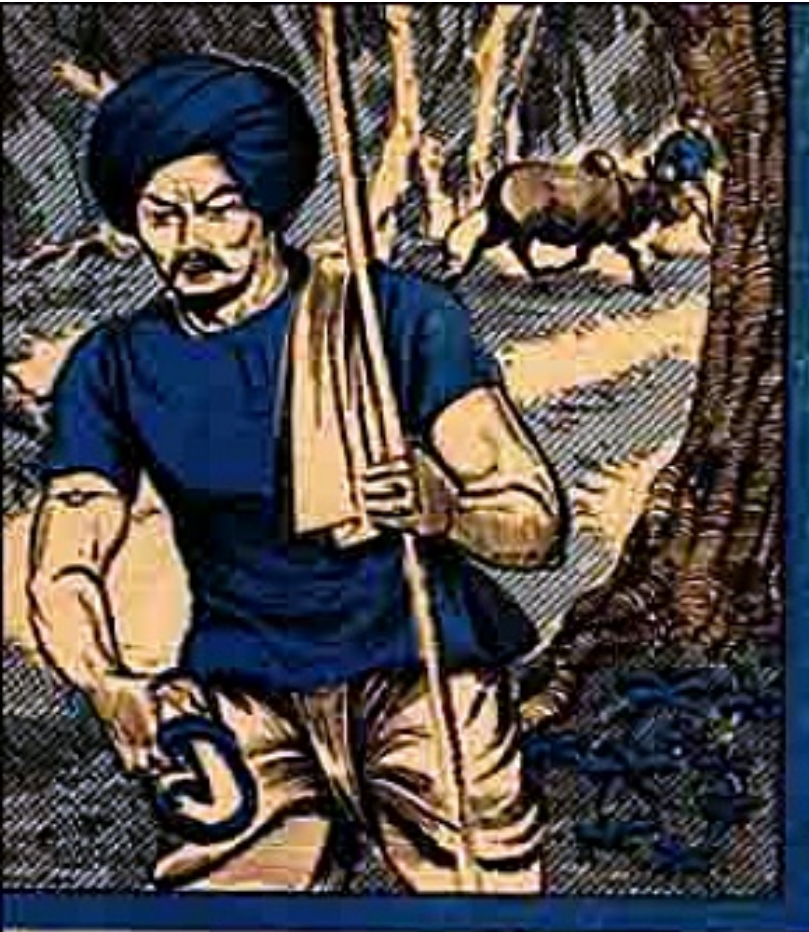
देखकर कहा—"अच्छी चप्पल है। परन्तु एक ही है। अच्छा होता यदि जोड़ी होती।" सोचकर वह आगे बढ़ गया।

किसान के आँखों से ओझल होते ही आनन्द झाड़ियों के पीछे से आया और चप्पल लेकर, पगडंडी से आगे भागकर उस चप्पल को किसान के रास्ते पर रख आया और फिर झाड़ियों के पीछे छुप गया।

थोड़ी देर में किसान आया। उसने चप्पल देखकर सोचा कि पहिले चप्पल की यह शायद जोड़ी की चप्पल है। वह अपने बैल को पासवाले पेड़ से बाँधकर पीछे मुड़ कर गया। आनन्द झाड़ियों के पीछे से आया और उस बैल को खोलकर डाकुओं के मकान में ले गया।

आनन्द की की हुई चोरी के बारे में सुनकर डाकू खुश हुए। और उसको उन्होंने अपना शिष्य बना लिया। परन्तु आनन्द तो डाकुओं का सरदार होना चाहता था। उसने इसी तरह की दो चोरियाँ और करने का निश्चय किया। वह एक रस्सी लेकर जंगल में निकल गया।

इस बीच, किसान यह सोचकर कि उसका पहिला बैल कहाँ चला गया था दूसरा बैल बेचने के लिए निकल पड़ा। आनन्द को यह बात पता लग गई। किसान के रास्ते में वह एक पेड़ पर चढ़ गया। एक टहनी से रस्सी बाँध दी। उसको अपने दोनों बगलों में लटकाकर उसने इस तरह दिखाया जैसे वह मर गया हो।

इस प्रकार लटकते आनन्द को देखकर "इसको किसीने अच्छी सजा दी है। इस जंगल के सब डाकुओं को यदि इस तरह की सजा मिले तो क्या अच्छा हो।" यह सोच किसान आगे बढ़ गया।

किसान के आँखो से ओझल होने के बाद आनन्द रस्सी में से हाथ निकालकर पंगड्डी से आगे जाकर, किसान के रास्ते के एक और पेड़ पर चढ़ गया। और पहिले की तरह लटकने लगा। किसान ने उसे देखकर सोचा—"किसी और को भी सजा मिली है।" वह आगे बढ़ गया।

आनन्द पगडंडी से फिर आगे बढ़ गया। फिर एक और पेड़ से लटकने लगा तीसरी बार उसे देखकर किसान को कुछ सन्देह हुआ। "देखने पर तो यह वही आदमी मालूम होता है। यह इतने पेड़ों पर कैसे आ मरा! यह मालूम करना ही होगा।" यह सोचकर वह बैल को एक पेड़ से बाँधकर पीछे की ओर भागा।

किसान के जाते ही आनन्द ने रस्सी खोली। उसे कन्धे पर डाल, बैल को खोल डाकुओं के पास ले गया। "शाबाश! अब तुझे हम अपने गुट में शामिल कर लेते हैं।" डाकुओं ने कहा।

जब उसका दूसरा बैल भी चला गया, तो किसान दुखी हुआ। उसके पास अब एक ही बैल बाकी रह गया था। अगर उसे न बेचता तो उसका गुजारा न होता। तीसरे बैल को लेकर डाकुओं से बचता जंगल के रास्ते वह जाने लगा। थोड़ी दूर जाने के बाद झाड़ियों के पीछे से उसे बैल का चिल्लाना सुनाई पड़ा।

"यह मेरा बैल ही है। जाने यह कैसे रस्सी खोलकर चला गया था और यहाँ वह चर रहा है। हो सकता है कि दोनों बैल यहीं हों।" यह सोचकर, अपने तीसरे बैल को रास्ते के पास वाले पेड़ से बाँधकर वह झाड़ियों में अपने बैलों को खोजने लगा।

उसके पास सन्धि के लिए दूत भेजे। उसने कहलवाया कि यदि वह घेरा छोड़कर चला गया तो उसे वह बहुत-सा सोना देगा। घेरे के कारण चित्तौड़ के लोग तरह तरह के कष्ट झेल रहे थे। उन्हें खाने को भी नहीं मिल रहा था। इसीलिए भीमसिंह सन्धि करना चाहता था।

परन्तु यह सुनते ही अलाउद्दीन ऐंठ बैठा। उसने सोचा कि बिना पद्मिनी को लिये वह वापिस न जायेगा। परन्तु उसने यह दूत से न कहा। "कहते हैं कि इस संसार में पद्मिनी से कोई अधिक सुन्दर नहीं है। अगर उसे मुझे एक बार दिखाया गया तो मैं सन्धि के लिए तैयार हूँ। यह भीमसिंह से कहो।" उसने दूत से कहा।

यह सुनते ही चित्तौड़ के राजपूतों का खून खौल उठा। परन्तु उन्होंने भी जनहित के लिए अलाउद्दीन की इच्छा को पूरा करने का निश्चय किया। "कल अगर तुम अकेले, निहत्थे चित्तौड़ के किले में आये तो तुम्हारी इच्छा पूरी करदी जायेगी।" उन्होंने अलाउद्दीन के पास जवाब भिजवाया।

अलाउद्दीन जानता था कि राजपूत वचन देकर मुकरते न थे। इसलिए वह
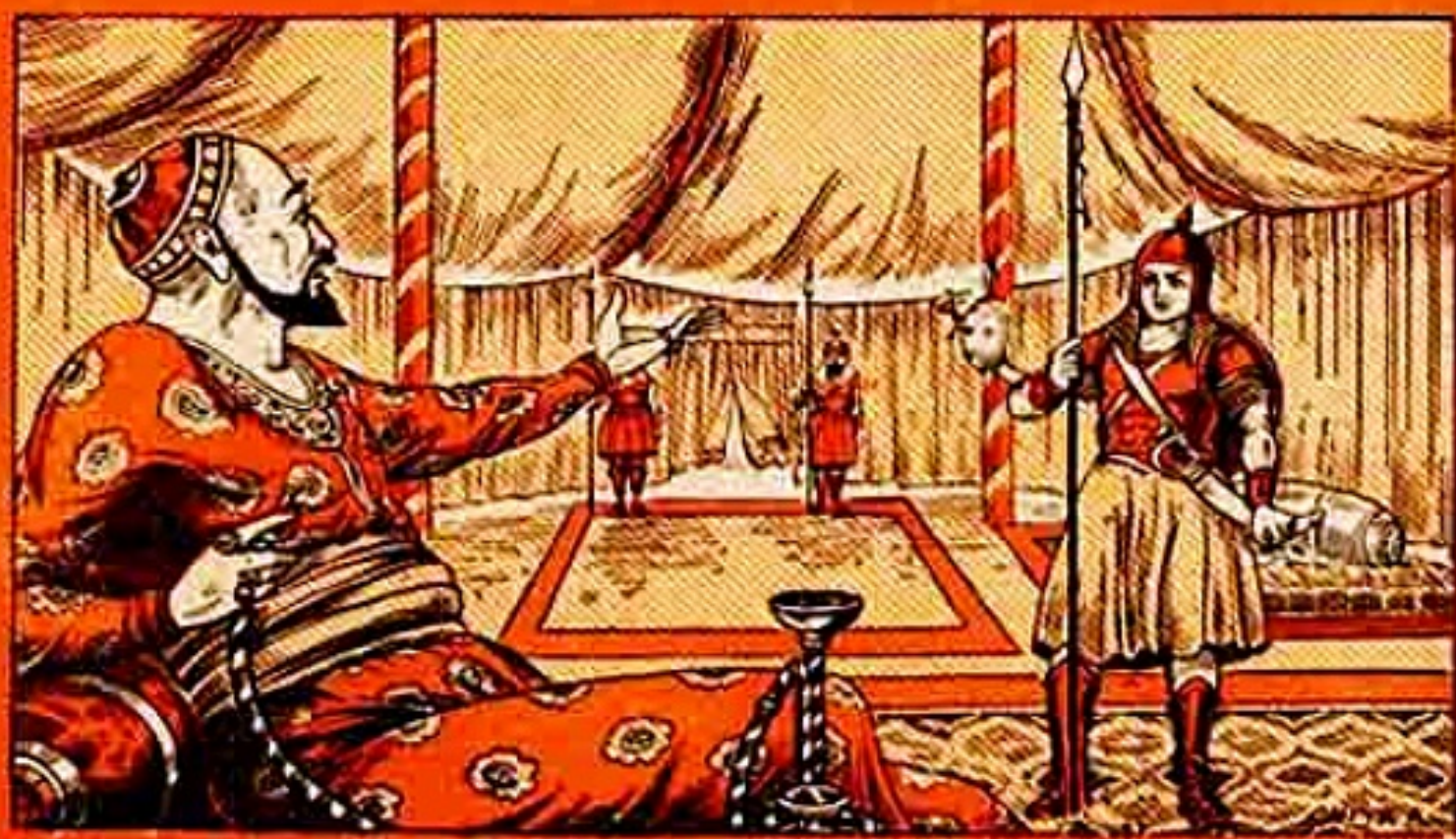
[१२]

[जब जगह जगह घूम कर बहुत कष्टों के सहने के बाद रूपधर स्वदेश पहुँचे तो उसका लड़का धीरमति उसके बारे में जानने के लिए निकला। घर में राजकुमारों का उसकी माँ के साथ शादी करने के लिए धरना देना, उसे न भाता था। उसने इस सिलसिले में पंचायत भी बुलाई पर कुछ तय न हुआ। इसलिये धीरमति पिता का वृत्तान्त जानने के लिए इथाका से पैलास के लिए रवाना हुआ।]

नौका जब पैलास तट पर पहुँची तो काफ़ी सवेरा हो गया था। समुद्र तट पर लोग वरुण देवता को काले बैलों की बलि दे रहे थे। वहाँ नौ यूथ थे। एक एक यूथ में पाँच-पाँच सौ आदमी थे। तट पर बड़ी-बड़ी भट्ठियाँ लगी हुई थीं। खाना बनाया जा रहा था।

नाविकों ने माल उतारा। नौका को किनारे पर लगाया। धीरमति और उसके साथ आया हुआ वृद्ध, सहन किनारे पर चलने लगे।

"अब हम नवयोत को देखने जा रहे हैं। तुम बिना किसी हिचकिचाहट के उससे साफ़-साफ़ कहना कि तुम किस काम पर आये हो। अपने पिता का वृत्तान्त पूछना। क्या वे तुम्हारे पिता के बारे में कुछ जानते हैं? क्या वे मर गये हैं,

अगर मर गये हैं तो कहाँ और कब मरे हैं ! मालूम करो कि नक्योत यह जानता है कि नहीं। नक्योत को अगर कुछ पता होगा तो छुपायेगा नहीं, बड़ा भला आदमी है। इन प्रश्नों को तुम्हारा पूछना ही अच्छा होगा।" धीरमति से सहन ने कहा।

"मैं अभी छोटा हूँ। मैं बड़ों से बातें नहीं करना जानता। इसीलिए मैं घबरा रहा हूँ।" धीरमति ने कहा।

सहन ने उसको ढाढ़स बँधाया। वह उसे उस शिविर में ले गया जहाँ नक्योत और उसके लड़के बैठे हुए थे।

अपरिचितों को आता देख नक्योत के लड़कों ने आगे बढ़कर धीरमति और सहन की अगवानी की। फिर उन्होंने नक्योत के समीप, रेत पर मुलायम खालों को बिछाया। उन पर अतिथियों को बिठाया। उनके लिए खान-पान की चीज़ें व अंगूरी रखी।

जब उन्होंने पेट-भर खा लिया तब नक्योत ने अतिथियों की ओर मुड़कर कहा—"अब बताइये कि आप कौन हैं ! आप किसी देश से समुद्र पार करके आये हैं ! आप यहाँ किस काम पर आये हैं !

नहीं तो कहीं जाते-जाते यहाँ पड़ाव कर रहे हैं!"

धीरमति ने धैर्यपूर्वक यह जवाब दिया। "महाराज! हम इथाका के रहनेवाले हैं। मैं निजी काम पर ही आया हूँ। मैं अपने पिता रूपधर के बारे में जानना चाहता हूँ। उन्होंने आपके साथ ट्रोय युद्ध में भाग लिया था। युद्ध में जो-जो गये थे उन सब के बारे में कुछ न कुछ जान सका, पर किसी ने भी मेरे पिता के बारे में कुछ न बताया। अगर आप निश्चित रूप से जानते हों कि वे मर गये हैं तो कृपा करके यह बताइये। आप सब ने रणभूमि में कितने ही कष्टों में हिस्सा बँटाया है। इसलिए आप जो कुछ जानते हैं कृपया वह बिना छुपाये मुझे यथा शीघ्र बताइये।"

यह सुन नयघोत ने उससे इस प्रकार कहा—"बेटा, तुमने एक साथ सब पुरानी बातें याद दिलादीं। वज्रकाय के नेतृत्व में हम सब नौकाओं में गये। ट्रोय नगर का घेरा डाला। नौ वर्ष तक भयंकर युद्ध चलता रहा। हमारे कई योद्धा रणभूमि में मारे गये। अगर उन सब घटनाओं

को सुनाने लगूँ तो पाँच-छः वर्ष लग जायेंगे। नौ वर्ष पश्चात् नाना कष्ट झेलने के बाद आखिर भगवान की कृपा से हमारी विजय हुई। परन्तु अनुभव और ज्ञान में एक भी तुम्हारे पिता के मुकाबले का न था। हम में कभी भी मन मुटाव न हुआ। हम दोनों की सलाह हमेशा एक रही। जो कुछ हुआ सो हुआ पर जब हम घर वापिस आने लगे तो हम में गुटबन्दियाँ शुरु हो गयीं। राजा और प्रताप भी एकमत के न थे। दोनों में तू तू मैं मैं हुई। फिर क्या था! बाकी योद्धाओं में भी फूट-सी पड़ गई! वे उन दोनों भाइयों में से जिसके साथ होना चाहते थे, हो गये। आधे लोग प्रताप के साथ निकल पड़े। बाकी आधे देवताओं की पूजा करने के लिए राजा के साथ रह गये। हम टनेडॉस पहुँचे थे कि तुम्हारे पिता ने कहा कि वह वापिस चला जायेगा। उसके साथ कुछ लोग चल दिये। मैं और देवमय और कुछ लोग सीधे घर चले आये। बेटा, यही हुआ। मैं और लोगों के बारे में नहीं जानता हूँ। सुना है कि वज्रकाय का लड़का, नयघोष और उसके सैनिक भी सुरक्षित पहुँच गये हैं। यह भी मालूम हुआ कि और भी कई लोग अपने अपने घर सही सलामत पहुँच गये हैं। तुमने सुना ही होगा कि राजा स्वदेश कैसे पहुँचा और कैसे अजबल ने उसकी पत्नी की मदद से उसके विरुद्ध साजिश की और कैसे उसको मरवाया गया। राजा का लड़का बहादुर था। उसने मौका पाकर अजबल को मारकर अपने पिता की हत्या का बदला लिया।

धीरमति ने नयघोत से कहा—"वह बड़ा भाग्यवान है। न जाने मैं उन लोगों

से बदला ले सकूँगा कि नहीं जो मेरी माँ से शादी करने के लिए हमारे घर धरना दिये हुए है।"

"हाँ बेटा, मैंने भी उन दुष्टों की बारे में सुना है। उनको क्यों बर्दाश्त कर रहे हो! क्या सब तेरे शत्रु ही हैं! अगर बुद्धिमति की तुझ पर कृपा हुई तो तू भी अपने पिता की तरह शत्रुओं का निर्मूल नाश कर सकेगा।" नवद्योत ने धीरमति से कहा।

वे बातें कर रहे थे कि दिन ढल गया। धीरमति अपनी नौका की ओर जाने के लिए उठा। परन्तु नवद्योत ने उसे जाने न दिया। "आज रात रूपधर का लड़का नौका में सोयेगा! क्या हमारा घर नहीं है! बिस्तरे-बिछौने नहीं हैं!" कहता वह धीरमति को अपने घर ले गया। केवल सहन और नाविकों का हाल-चाल जानने के लिए उस समय नौका वापिस चला गया।

अगले दिन, धीरमति ने उठकर स्नान किया। स्नान करके कपड़े बदले। उसको प्रताप की रहने की जगह ले जाने के लिए एक घोड़ा गाड़ी का इन्तजाम किया गया।

रास्ते में भोजन के लिए आवश्यक वस्तुयें लेकर नवद्योत का एक लड़का भी उसके साथ गाड़ी में बैठा। वे दो दिनों की यात्रा के बाद प्रताप के देश में सकुशल पहुँचे।

ठीक उसी समय प्रताप अपनी लड़की का वज्रकाय के लड़के के साथ विवाह कर रहा था। उस विवाह के लिए वहाँ बहुत से लोग आये हुए थे। एक बड़े मँड़प में विनोद और मनोरंजन का कार्यक्रम चल रहा था। इतने में प्रताप के अंगरक्षक ने आकर कहा—"महाराज!

कोई दो युवक गाड़ी में आये हैं। क्या उन्हें अन्दर लाऊँ या उन्हें कहीं और जाने के लिए कहूँ!"

प्रताप ने झुंझलाकर कहा—"मुझे नहीं मालूम था कि तुम इतने मूर्ख हो। हम परदेश में जब दर दर भटका करते थे तो हमने कितनी बार दूसरों से आतिथ्य नहीं माँगा! तुरत जाकर उन युवकों को भोजन के लिए बुलाओ।"

थोड़ी देर बाद धीरमति और उसका साथी मंडप में आये और आश्चर्य से चारों ओर देखने लगे। वहाँ उन्हें सूर्य और चाँद चमकते से लगे। नौकरों ने उनको ले जाकर स्नान करवाया, कपड़े दिये। उनका सत्कार किया और उनको लाकर ठीक प्रताप के पास भोजन के लिए बिठा दिया।

प्रताप ने उनसे कहा—"तुम तो राजकुमार दिखाई देते हो। मामूली आदमी नजर नहीं आते। पहिले भोजन कीजिये फिर बताना कि आप कौन हैं और किस काम पर आये हैं।"

भोजन करने के बाद धीरमति ने अपने साथी के कान में कहा—"देखा, यहाँ

कितना काँसा, चान्दी, सोना, हाथी का दान्त वगैरह है!" यह बात प्रताप के कान में भी पड़ी।

"मैंने यह सम्पदा अनेक देशों में घूम फिर कर इकट्ठी की है। ट्रोय नगर के दीवारों के आगे मेरे कितने ही सैनिक मारे गये हैं। अगर वे जीवित रहते और ये सम्पदा न भी होती तो भी मैं अधिक सुखी होता। मैं उनके लिए कभी कभी रोता हूँ। पर सबसे अधिक मैं रूपधर को ही याद करके रोता हूँ। जब कभी रात में वह याद आता है तो सो नहीं पाता हूँ। जब मेरी ही यही हालत है तो उसके वृद्ध पिता, पत्नी और लड़का न जाने कितना रूपधर के लिए रोते होंगे!" प्रताप ने कहा।

यह सुनते ही श्रीमति अपना दुख न रोक सका। जब वह आँखें पोंछ रहा था तब भुवनसुन्दरी वहाँ आई।

श्रीमति को देखते ही उसने पूछा—"जाने यह लड़का कौन है, पर हूबहू रूपधर जैसा ही है!"

"हाँ, ठीक कहती हो," प्रताप ने श्रीमति की ओर देखते हुए कहा।

नवद्योत के लड़के ने प्रताप से कहा—"महाराज! आपने ठीक ही कहा है। यह रूपधर का लड़का ही है। रूपधर के न होने के कारण उसके घर में बुरी हालत हो रही है। वह बड़ी मुसीबत में है। आप शायद इसको कोई सलाह, मदद दे सकें, यह सोच कर मेरे पिता जी ने मुझे इसके साथ आपके पास भेजा है।"

"रूपधर के लड़के का मेरे घर आना कितना विचित्र है!" प्रताप ने कहा। वे रूपधर के बारे में उसके बाद बहुत देर तक बातें करते रहे। रूपधर का अपने बदन पर जबर्दस्त घाव कर, ग्रीक शिविर से भागे हुए गुलाम के रूप में ट्रॉय नगर में आना और उसका उसको पहिचानना आदि, के बारे में, तब भुवनसुन्दरी ने बताया।

जब वे सब काठ के घोड़े में बैठे थे, तब भुवनसुन्दरी का एक एक का नाम लेकर पुकारना और जब उनमें से कुछ बाहर कूदने को तैयार थे तब रूपधर ने जो वृत्तान्त बताया था, वह भी प्रताप ने विस्तार पूर्वक सुनाया।

आखिर धीरमति ने कहा—"महाराज! मैं आपके पास अपने पिता के बारे में जानकारी पाने के लिए आया हूँ अगर आप कुछ जानते हों तो बिना छुपाये कृपया बताइये।" उसने कहा। "जो कुछ मैं जानता हूँ, बताता हूँ, सुनो। जब मैं मिश्र में रह गया था तब मुझे समुद्रों में रहनेवाला बूढ़ा दिखाई दिया। उसने मुझे बहुतों के विषय में बताया। उसी से पता लगा कि रूपधर अपने सैनिकों को खो बैठा था और किसी द्वीप में सम्मोहिनी के जाल में पड़ा हुआ था।" (अभी और है)

पद्मिनी

दिल्ली के बादशाहों में अलाउद्दीन खिलजी भी एक था। वह बड़ा दुष्ट था। उसमें दो विचित्र इच्छायें थीं। एक संसार को जीतने की इच्छा और दूसरी खूबसूरत स्त्रियों को अपनी पत्नी बनाने की इच्छा।

अलाउद्दीन जब राजपूताना को जीत रहा था तब उसे पद्मिनी के सौन्दर्य के बारे में मालूम हुआ। तुरत पद्मिनी को पाने की उसकी इच्छा हुई।

मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ थी। मेवाड़ का उन दिनों राजा लकुमसिंह था। क्योंकि वह बहुत छोटा था इसलिए उसका चाचा, भीमसिंह उसके बदले राज्य-कार्य कर रहा था। पद्मिनी भीमसिंह की पत्नी थी। उसका जन्म स्थान सिंहल देश था। सौन्दर्य में उससे बढ़कर उस समय कोई न था।

अलाउद्दीन को तो यह घमंड था कि वह दूसरा सिकन्दर था। उसने पद्मिनी को अपने पराक्रम से जीतना चाहा। इसलिए उसने चित्तौड़ के किले पर धावा बोल दिया। किला पहाड़ की चोटी पर था। उसको जीतना आसान काम न था। अलाउद्दीन की सेना ने किला घेर तो लिया पर वे चित्तौड़ के किले को जीत न पाये।

राजपूत चित्तौड़ के किले की जी-जान से रक्षा कर रहे थे। अलाउद्दीन भी अपनी सेना भेजता जाता था। परन्तु उसकी सेना निरन्तर मार दी जाती, हरा दी जाती। अलाउद्दीन को निराशा होने लगी। वह बिना जाने कि पद्मिनी वस्तुतः सुन्दर थी कि नहीं, वह अपने सेना को उसके लिए बलि दे रहा था।

अलाउद्दीन चित्तौड़ का घेरा छोड़कर जब वापिस जानेवाला था तो भीमसिंह ने

सके पास सन्धि के लिए दूत भेजे। सने कहलवाया कि यदि वह घेरा छोड़कर ला गया तो उसे वह बहुत-सा सोना गा। घेरे के कारण चित्तौड़ के लोग रह तरह के कष्ट झेल रहे थे। उन्हें ाने को भी नहीं मिल रहा था। इसीलिए ीमसिंह सन्धि करना चाहता था।

परन्तु यह सुनते ही अलाउद्दीन ऐंठ ठा। उसने सोचा कि बिना पद्मिनी को ल्ये वह वापिस न जायेगा। परन्तु उसने ह दूत से न कहा। "कहते हैं कि इस सार में पद्मिनी से कोई अधिक सुन्दर नहीं है। अगर उसे मुझे एक बार दिखाया गया तो मैं सन्धि के लिए तैयार हूँ। यह भीमसिंह से कहो।" उसने दूत से कहा।

यह सुनते ही चित्तौड़ के राजपूतों का खून खौल उठा। परन्तु उन्होंने भी जनहित के लिए अलाउद्दीन की इच्छा को पूरा करने का निश्चय किया। "कल अगर तुम अकेले, निहत्थे चित्तौड़ के किले में आये तो तुम्हारी इच्छा पूरी करदी जायेगी।" उन्होंने अलाउद्दीन के पास जवाब भिजवाया।

अलाउद्दीन जानता था कि राजपूत वचन देकर मुकरते न थे। इसलिए वह

अकेला, निहत्था किले में गया। परन्तु उसके मन में एक नीच ख्याल आया। वह धोखे से पद्मिनी को भगा ले जाने की सोचने लगा।

पहरेदारों ने बादशाह को सगौरव किले के अन्दर जाने दिया। भीमसिंह ने उसका स्वागत किया। सुशोभित दरबार में अलाउद्दीन ने पद्मिनी को देखा। परन्तु वह पद्मिनी को प्रत्यक्ष न देख सका। शीशे में उसने पद्मिनी का प्रतिबिम्ब देखा। एक शीशे में ही नहीं, बारह शीशों में बारह बार प्रतिबिम्बित पद्मिनी के मुँह को उसने देखा। वह जान गया कि दुनियाँ में पद्मिनी से अधिक कोई सुन्दर स्त्री न थी।

शीशे में जब अलाउद्दीन टकटकी लगाये पद्मिनी को देख रहा था तो राजपूतों का दिल गुस्से से दहक रहा था।

आखिर अलाउद्दीन की नजर एक तरफ़ मुड़ी। वह जाने के लिए उठा। भीमसिंह उसको छोड़ने के लिए उसके साथ गया। पद्मिनी अपमान के कारण रो रही थी और अन्तःपुर की स्त्रियाँ उसको आश्वासन दे रही थीं।

अलाउद्दीन जब पहाड़ से उतर रहा था, तो उसने भीमसिंह के सामने पद्मिनी की खूब प्रशंसा की। अगर भीमसिंह वचन बद्ध न होता तो उस नीच को आसानी से गला घोंटकर मार सकता था।

दोनों मुसल्मानों के तम्बुओं के पास पहुँचे। बादशाह की, पद्मिनी को अपनी पत्नी बनाने की इच्छा और भी प्रबल हो उठी। उसने अपने सिपाहियों को इशारा किया। तुरत उन्होंने भीमसिंह पर हमला किया और उसको बाँधकर एक तम्बू में कैद कर दिया।

इस अत्याचार के बारे में जब राजपूतों को खबर मिली तो वे हैरान रह गये। उन्होंने अलाउद्दीन के पास खबर भेजी कि वह उनके राजा को तुरत छोड़ दे। अलाउद्दीन ने खबर भिजवाई कि यदि पद्मिनी उसके पास भेजी गई तो वह उनके राजा को वापिस भेज देगा।

एक सप्ताह तक राजपूत सोचते रहे। लक्ष्मसिंह तो बच्चा था। भीमसिंह के कैद किये जाने पर चित्तौड़ की प्रजा का कोई अच्छा सरदार न था। अब सब कामों के लिए पद्मिनी ही जिम्मेवार थी। उसने

सबको बुलाकर सभा की। और अपने एक सम्बन्धी गोरासिंह को सेनापति नियुक्त किया। भीमसिंह की रक्षा के लिए भी उसने एक उपाय सुझाया। सभासद भी उससे सहमत थे।

चित्तौड़ से गोरासिंह दूत बनकर बादशाह के पास गया। "बादशाह, अगर आपने हमारे राजा को छोड़ दिया तो पद्मिनी आपके पास आयेंगी, परन्तु उनके साथ कई दासियां भी आयेंगी और आपको उनके आने की अनुमति देनी चाहिये।"

बादशाह की प्रसन्नता की सीमा न रही। "पद्मिनी अपने पद के अनुरूप शान-मान से आ सकती है। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु उन्हें तुरत आना होगा।"

"रानी के साथ क्या कुछ सिपाही भी आ सकते हैं?" गोरासिंह ने पूछा।

"नहीं, नहीं, यह विवाह है। युद्ध नहीं है।" अलाउद्दीन ने हँसते हुए कहा। गोरासिंह वापिस चला गया।

बादशाह ने अपने सैनिकों को बुलाकर कहा—"आज का दिन हमारे लिए

त्योहार है। तुम जैसे चाहे, इसे मनाओ।"

जब अलाउद्दीन की छावनी में मजे उड़ाये जा रहे थे तब सात सौ पालकियाँ पहाड़ से नीचे आईं। एक एक पालकी को छः छः आदमी ढो रहे थे।

बादशाह ने अपने अच्छे कपड़े पहिने। अपने तम्बू को भी खूब सजाया। वह पद्मिनी की प्रतीक्षा करने लगा। पालकियाँ आकर उसके तम्बू के सामने रुकीं। गोरासिंह ने अलाउद्दीन से कहा—"पद्मिनी आ गई हैं। अब आप कृपया राजा को छोड़िये।"

"अभी नहीं। पहिले मुझे पद्मिनी से शादी कर लेने दो।" अलाउद्दीन ने कहा।

"यह बात है तो पद्मिनी को पहिले अपने पति को तलाक़ देने दीजिये।" गोरासिंह ने कहा। बादशाह को बहुत झिझक के बाद यह भी मानना पड़ा। पद्मिनी के भीमसिंह के तम्बू में पैर रखते ही, भीमसिंह ने आश्चर्य से पूछा—"तुम!"

"चिल्लाइये मत। यह लीजिये तल्वार। बाहर दो घोड़े तैयार हैं। आइये भाग निकलें।" पद्मिनी ने कहा।

पहरेदार अभी धोखा ताड़ नहीं पाये थे कि भीमसिंह और पद्मिनी तम्बू से बाहर निकले और घोड़ों पर सवार होकर चित्तौड़ की ओर भागने लगे। ठीक उसी समय पालकियों में से सशस्त्र योद्धा बाहर निकले और उन्होंने मुसल्मानों पर हमला बोल दिया। उन पालकियों को ढोनेवाले भी सैनिक थे। करीब पाँच हज़ार राजपूत और मुसल्मानों में घोर युद्ध हुआ। इस युद्ध में राजपूत बहुत बड़ी संख्या में मारे गये। परन्तु अलाउद्दीन की बहुत-सी सेना नष्ट हुई। वह क्रोध और निराशा में घेरा उठाकर, दिल्ली वापिस चला गया।

उल्टा सीधा न्याय

सिंहल देश में एक व्यापारी रहा करता था। उसने देश विदेशों से व्यापार करके बहुत-सा रुपया कमाया था। जब वह मृत्यु शैय्या पर था तो उसने अपने पुत्र जयपाल को बुलाकर अपने व्यापार को सौंपते हुए कहा—"बेटा, तुम भी मेरी तरह देश विदेशों से व्यापार करना। पर भूलकर भी वंचक महापट्टन न जाना।"

पिता के गुजर जाने के बाद जयपाल अपनी चार नौकाओं को लेकर व्यापार करने लगा। उसकी यह इच्छा हुई कि देखा जाय कि वंचक महापट्टन में जाने से क्या होता है। वह अक्लमन्द था। अगर कोई उसे धोखा देता तो वह भी बढ़कर धोखा दे सकता था। दहले पर नहला मार सकता था। इसलिए वह अपनी चार नौकायें लेकर उस शहर में पहुँचा।

नौकाओं को बन्दरगाह में छोड़कर अपना धनुष बाण लेकर जयपाल समुद्र के किनारे शिकार खेलने गया। उसे एक जगह सारस दिखाई दिया। वह समुद्र में मछली पकड़ रहा था। जयपाल ने धनुष पर बाण चढ़ाकर सारस पर मारा। तुरत वह मरकर समुद्र में गिर गया।

पास ही एक मछियारा मछली पकड़ रहा था। उसने जयपाल के पास भागकर पूछा—"तुम कौन हो? तुमने मेरे पिता को मारा है। मैं तुम्हारी राजा से शिकायत करूँगा।"

"यह सारस क्या तुम्हारा पिता है?" जयपाल ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ, मेरे पहिले जन्म में यह मेरा पिता था। अब सारस का जन्म लेकर, मछली पकड़ने में मेरी मदद कर रहा है।" मछियारे ने कहा।

जयपाल को गुस्सा आया। "जा बे, जा, जहाँ चाहे तू शिकायत कर।" उसने मछियारे को डराया धमकाया।

फिर वह जब शहर में चल रहा था तो एक आदमी ने सामने आकर कहा—"अरे भाई, कितने दिनों बाद दिखाई दिये! बहुत साल पहिले मैंने अपना दायाँ कान तुम्हारे पिता के पास गिरवी रखकर दस रुपये उधार लिये थे। वह दस रुपये चुका देता हूँ। तुम मेरा कान मुझे वापिस कर दो।"

जयपाल ने हैरान होकर उस आदमी की ओर देखा। उसके सिर्फ बायाँ कान ही था। दायाँ कान न था। "मेरे पिताजी ने तेरे कान के बारे में मुझसे कुछ न कहा था। अगर लिया होता तो कहते।" जयपाल ने उस आदमी से कहा।

"अगर तुमने मुझे मेरा कान न दिया तो मैं तुम्हारी शिकायत करूँगा।" कहकर वह आदमी चला गया।

जयपाल थोड़ी दूर और गया तो उसको एक स्त्री दिखाई दी। "देखो बेटा, सोलह साल पहिले तुम्हारे पिता यहाँ आये थे। उन्होंने मुझसे शादी की और फिर मुझे छोड़कर चले गये। वचन दिया था

कि मेरे गुजारे के लिए दस हज़ार रुपये देंगे। वह रुपया तुम देते हो कि नहीं? नहीं तो मैं शिकायत करूँगी।"

जयपाल यह धांधली न सह सका। उसने कहा—"जा, मैं तुझे दमड़ी भी न दूँगा।" वह फिर अपनी नौकाओं के पास चला गया। उसे बन्दरगाह के पास एक नाई दिखाई दिया। उसने कहा—"हुक्म हो तो हजामत बनाऊँ!"

"क्या लोगे?" जयपाल ने पूछा।

"मुझे सन्तुष्ट कीजिये महाराज।" नाई ने कहा।

जयपाल मान गया। उसने उससे हजामत करवाई और एक रुपया देना चाहा। नाई ने लेने से इनकार कर दिया। पाँच रुपये भी उसने लेने से मना कर दिया। जयपाल को गुस्सा आ गया। "जा, मैं तुझे कुछ नहीं दूँगा। जा तू भी जहाँ चाहे शिकायत कर।"

मछियारा, बिना कान का आदमी, स्त्री और नाई, चारों राजदरबार में गये और उन्होंने जयपाल के विरुद्ध फ़रियाद की। जयपाल को दरबार में बुलाया गया। सुनवाई शुरु हो गई।

पहिले पहल मछियारे ने राजा से कहा—"महाराज, मेरे पिता मर कर सारस के रूप में पैदा हुये और वे मछली पकड़ने में मेरी सहायता कर रहे थे—और इसने उनको मार दिया और इस तरह मेरा नुक्सान किया।"

राजा ने जयपाल की ओर मुड़ कर कहा—"इस मछियारे को हरजाने में एक नौका दो।"

फिर बिना कान के आदमी ने शिकायत की—"महाराज, मैंने इस व्यक्ति के पिता के पास बायाँ कान गिरवी रखकर दस रुपये उधार लिए थे। मैंने कहा कि मैं उधार वापिस कर दूँगा मेरे कान दे दो तो यह कहता है कि जा तू जहाँ चाहे शिकायत कर ले।"

राजा ने फ़ैसला दिया कि जयपाल उसको भी एक नौका हरजाने में दे।

फिर स्त्री ने जयपाल की शिकायत की। उसको भी राजा ने हरजाने में जयपाल से एक नौका दिलवाई।

आखिर नाई ने शिकायत की—"महाराज, इन्होंने कहा था कि मुझ से हजामत करवाकर, मुझे सन्तुष्ट करेंगे। अगर आप इनकी एक नौका दिलवायें तो मैं भी सन्तुष्ट हो जाऊँगा। इससे कम मैं किसी चीज़ से भी, किसी हालत में भी सन्तुष्ट न होऊँगा।"

"जो नाई कह रहा है, वह ठीक ही है। इसलिए जयपाल को, इसे भी एक नौका देनी होगी।" राजा ने झट फ़ैसला दे दिया।

इन फरियादों का फ़ैसला सुनकर जयपाल हैरान रह गया। वह भलीभाँति जान गया कि उस नगर को ठगक महापट्टन क्यों कहते थे और क्यों उसके पिता ने वहाँ जाने के लिए मना किया था। सिवाय गले के हार

के उसकी सारी सम्पत्ति चली गई थी।
"अब क्या किया जाय? यहाँ से बाहर कैसे निकला जाय?" वह यह सोच रहा था कि राजदरबार में राजा का दस वर्ष का लड़का आया।

तुरत जयपाल ने अपने गले का हार राजकुमार के गले में डाल दिया। दरबार में सबने करतल ध्वनि करके हर्ष प्रकट किया। राजा ने भी अपने लड़के को पास बुलाकर उसके गले में हार देखा। वह भी सन्तुष्ट हुआ।

जयपाल ने दरबारियों की ओर मुड़कर कहा—"क्या दरबार में कोई ऐसा है, जो मेरे राजकुमार को हार देने पर सन्तुष्ट न हुआ हो?"

"कोई नहीं है, हम सब को सन्तोष है।" सब चिल्लाये।

जयपाल ने नाई की ओर मुड़कर पूछा—"क्यों भाई, क्या तुम भी सन्तुष्ट हो?"

नाई यह कहे बगैर रह न सका कि वह भी सन्तुष्ट था।

जयपाल ने राजा की ओर मुड़कर कहा—"महाराज! मैंने नाई को सन्तुष्ट कर दिया है। इसलिए उसे मेरी नौका देने की जरूरत नहीं है?"
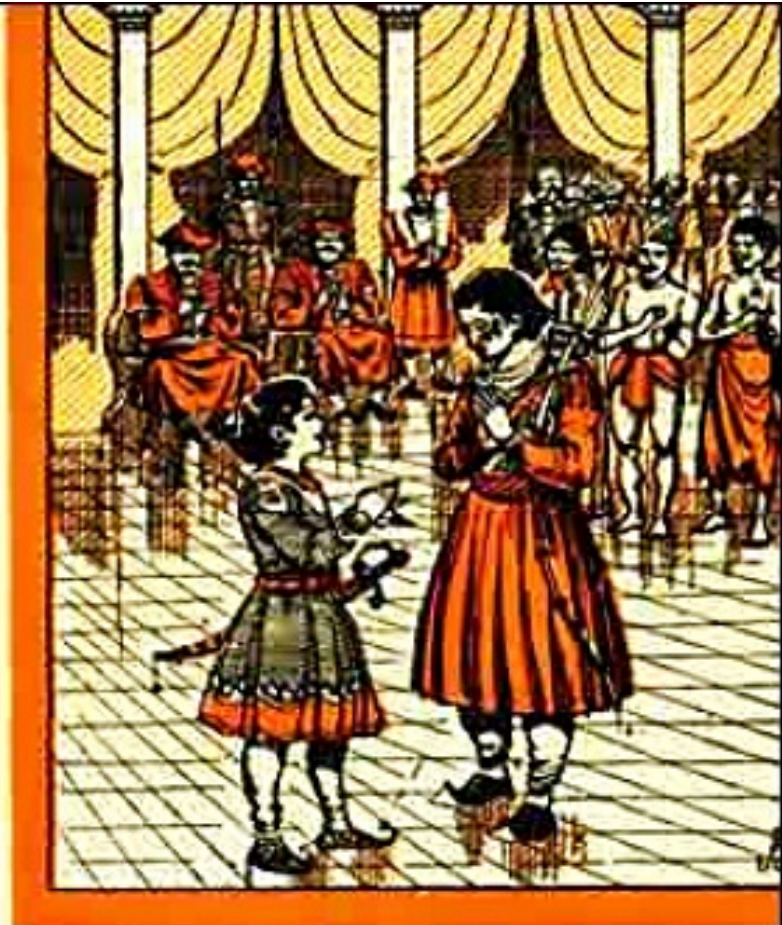
"हाँ, जरूरत नहीं है।" राजा ने कहा।

फिर जयपाल ने स्त्री से पूछा—"तुम्हें गुजारे के बारे में एक बात बतानी होगी। मैं गुजारे केलिये तुम्हें पैसा दूँगा। पर एक कठिनाई है। हमारे देश की रीति के अनुसार पत्नी को पति के साथ सती होना पड़ता है। दुर्भाग्य से मेरे पिता एक वर्ष पहिले मर गये। इसलिये अगर एक चिता जला कर तुम सती हो

गई तो तुम्हारे उत्तराधिकारियों को मैं गुजारा दूँगा।"

"मैं कभी भी जबर्दस्ती नहीं मरूँगी।" उस स्त्री ने कहा। जयपाल ने तब राजा को कहा—"महाराज! मैं नहीं समझता कि मुझे इन्हें कोई हरजाना देना होगा।" राजा भी उससे सहमत हो गया।

उसके बाद जयपाल ने बिना कान के आदमी से कहा—"तुमको कान देने में भी कोई आपत्ति नहीं है। मेरे पिता के ज़माने में कितनों ही ने तुम्हारी तरह अपने कान गिरवी रखकर रुपया उधार लिया था। उनमें तुम्हारा कान पहिचानना मुश्किल है। इसलिये अभी तुमने अपना बायाँ कान काटकर दिया तो उससे मिलाकर, तुम्हारा दायाँ कान ढूँढ़कर तुम्हारे पास भेज दूँगा।"

इसकेलिये बिना कान का आदमी न माना। राजा ने कहा कि उसे भी हरजाना देने की ज़रूरत न थी।

फिर जयपाल ने राजा से कहा। "महाराज! मेरे पिता मरने के बाद मछली के रूप में पैदा हुये और वे उस रूप में मेरी नौका चलाने में मेरी सहायता कर रहे थे कि इस मछियारे के सारस पिता ने उसे निगल लिया। यदि मछली के रूप में वे न पैदा होते तो मैं यहाँ आता ही न!"

राजा यह सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने कहा कि मछियारे को भी कोई हरजाना देने की ज़रूरत न थी। उसके बाद जयपाल एक दिन राजा का अतिथि बनकर रहा। उसको राजा ने कई उपहार भी दिये। वह अपनी नौकायें लेकर चला गया।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

सितम्बर १९५८ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ७, जुलाई '५८ के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

जुलाई – प्रतियोगिता – फल

जुलाई के फ़ोटो के लिये निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : मौत से खेल...
दूसरा फ़ोटो : करो तो जानें!
प्रेषक : श्री रोशनलाल घुस्सा
C/o श्री सरधारीलाल घुस्सा (गवर्मेंट कॉन्ट्रैक्टर) दुमका, संथाल परगना, बिहार.

चमगादड़

हम सब जानते ही हैं कि चमगादड़ वस्तुतः पक्षी नहीं हैं। वे मनुष्यों की तरह स्तन जन्तु हैं। इसलिए वे अंडे नहीं देते। बच्चे देते हैं और दूध देकर उन्हें पालते हैं। चमगादड़ के शरीर पर रोम होते हैं। उनके पंख असली पंख नहीं होते। मनुष्य के हाथ की हड्डियों की तरह हड्डियाँ भी उनके पंखों में होती हैं। परन्तु उनके हाथ लम्बे होते हैं और उनमें चमड़े की परत होती है। इसी परत की वजह से वे उड़ पाते हैं। उड़नेवाले चमगादड़ अपने पंखों को सेकन्ड में पन्द्रह बार ही हिलाते हैं। हम प्रायः चमगादड़ों के झुंडों को दिन में पेड़ों की टहनियों से लटकते देखते हैं। उनको "अन्धे पक्षी" भी कहते हैं, क्योंकि कई सोचते हैं कि उन्हें दिखाई नहीं देता। परन्तु यह सच नहीं है। चमगादड़ों की आँखें हैं। घने से घने अन्धेरे में भी वे किसी चीज़ से नहीं टकराते।

रात में जब कभी चमगादड़ घरों में आता है तो बहुत तेज़ी से चक्कर काटता है। पर वह किसी से टकराता नहीं। इसका कारण यह है कि उड़ते समय चमगादड़ अपने कानों का अधिक उपयोग करते हैं बजाय आँखों के, वे
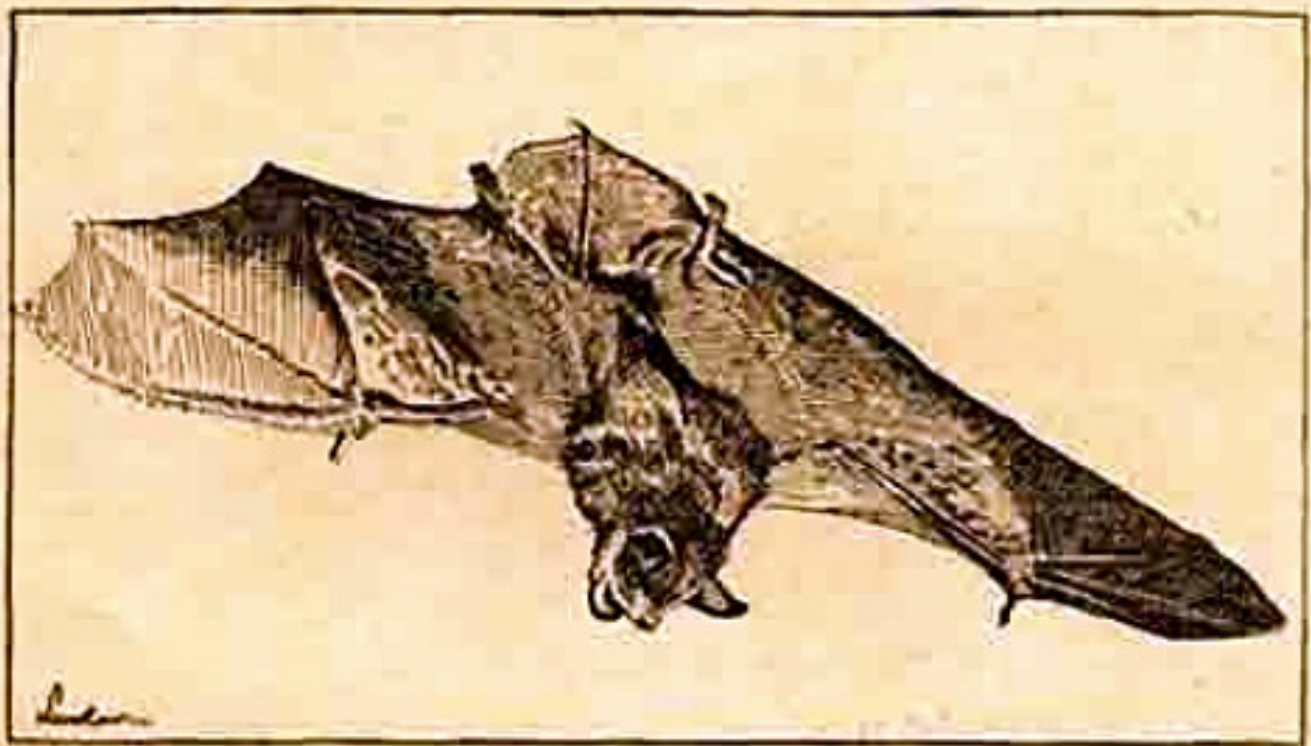
अपने मुख से ध्वनि करते हैं और उसकी प्रतिध्वनि द्वारा वे रास्ते की चीज़ों के बारे में जान जाते हैं और उनसे बच जाते हैं। इसलिए आँखें बन्द करके अगर चमगादड़ को उड़ायें तो बिना किसी चीज़ से टकराये उड़ता रहता है। परन्तु यदि उसके कान बन्द कर दिये जायें तो वह नहीं उड़ सकता।

हम यह कैसे जानते हैं कि चमगादड़ मुख से ध्वनि करते हैं? हम इस ध्वनि को कभी नहीं सुनते हैं। परन्तु "राडार" यन्त्र द्वारा यह मालूम हुआ है कि वह ध्वनि करता है। वह ध्वनि हमें इसलिए नहीं सुनाई पड़ती क्योंकि वह बहुत ऊँची नहीं होती।

चमगादड़ घोंसले नहीं बनाते। वे ऊँची जगह पर किसी छेद-छादों में रहते हैं। चमगादड़ का बच्चा, माँ से चौथा या पाँचवाँ हिस्सा होता है। जन्म से ही चमगादड़ के बच्चे के नाखून बड़े होते हैं। जब चमगादड़ भोजन खोजने के लिए निकलता है तो साथ बच्चे को भी ले जाता है।

चमगादड़ों को देखकर हमें घृणा होती है। परन्तु उनके कारण हमारी कोई हानि नहीं होती। वे उन कृमिकीटों को खाते हैं जो हमारा नुक्सान करते हैं।
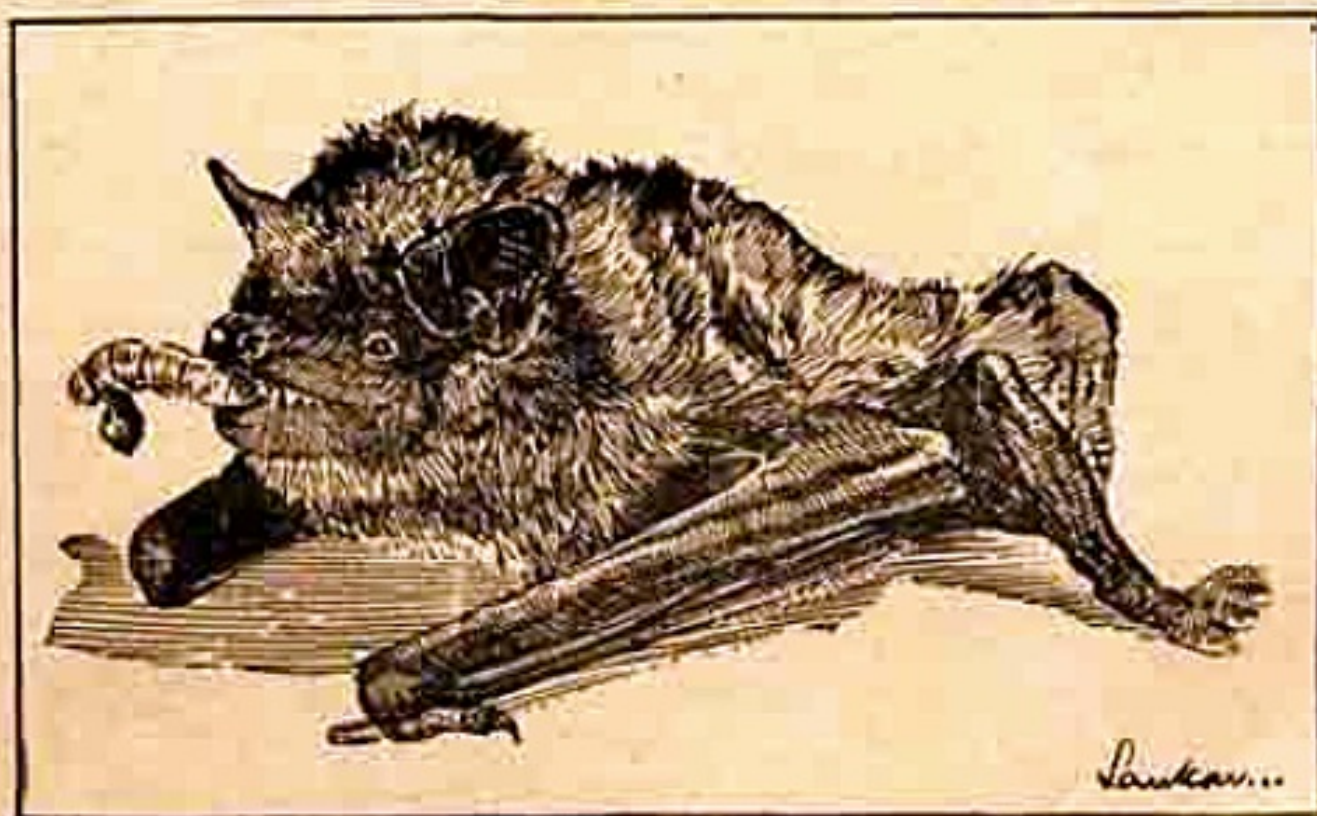
चित्र - कथा

एक दिन दास और वास "टायगर" को लेकर नहर में नहाने गये। नहर के किनारे एक बड़े लड़के ने उनसे कहा—"नहर में मगर हैं, अगर तुमने दो आने दिये तो मैं उसे उठा ले जाऊँगा और तुम आराम से नहा सकोगे।" इतने में टायगर किनारे पर मगर को मुख में पकड़ कर भागने लगा। यह देख उस लड़के ने कहा—"अरे, वह मेरा छः आने का रबर का मगर लिये भागा जा रहा है।" दास और वास का हँसते हँसते पेट फूल गया। वे आराम से नहाये।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by him for Chandamama Publications, from Madras 26.—Controlling Editor: SRI 'CHAKRAPANI'

सफेद बालोंको श्याम बनाईये.
दिमागको ठंडक
पहुंचानेवाला
सुमधुर सुवासित
सर्वोत्तम
केशतेल.
सोल अेजन्ट: फोन 51602
अेम. अेम. खंभातवाला
रायपुर · अहमदाबाद

हम यह नहीं कहते,
हम उत्तमोत्तम हैं
पर
निम्न वस्तुओं में हम
उत्तमोत्तम
कार्य कर दिखायेंगे :
पोस्टर्स
कैलेंडर्स
कार्टून्स
लेबल्स
बुकलेट्स
फोल्डर्स
आफ़सेट प्रिंटिंग के सभी काम
उत्तम छपाई का चिह्न....
IP

जब सब उपाय
निष्फल हो जायें...

... तो

मॅनर्स ग्राइप मिक्शचर

दीजिये

और देखिये मुस्कुराहट उसके
चेहरे पर फिर खिल उठती है

४० पृष्ठों की "मदरक्राफ्ट एण्ड चाईल्डकेयर" नामक पुस्तिका मँगाने के लिये पी. ओ. बॉक्स नं. ९७६, बम्बई १ को लिखिये, तथा साथ में ४० नये पैसों का टिकट और एक कूपन (जो हर शीशी के साथ होता है) अवश्य भेजिये।

उत्कृष्टता के प्रतीक
मार्क को अवश्य देखें।

यह मैनर्स उत्पादन
का प्रमाण है।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD., BOMBAY · DELHI · CALCUTTA · MADRAS.

Photo by P. R. Shinde

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

....करो तो जानें !

प्रेषक :
श्री रोशनलाल गुप्ता, दुमका

रूपधर की यात्राएँ